IQAC - To be filled in Event file,

# विश्वविद्यालय-हिन्दी-विभाग

## ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय
## कामेश्वरनगर, दरभंगा-846008

12/7/2021

पत्रांक: PG Hindi.588/21 दिनांक 07.07.2021

सेवा में,
माननीया प्रतिकुलपति महोदया,
ललितनारायण मिथिला विश्वविद्यालय,
कामेश्वर नगर, दरभंगा

संदर्भ — पत्रांक-IQAC-1179-1185/21, दिनांक-11.06.2021

विषय — विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग द्वारा नागार्जुन-जयंती के अवसर पर ऑनलाइन माध्यम से विभिन्न प्रतियोगिताओं के आयोजन में छात्र-छात्राओं की सहभागिता के संदर्भ में।

महोदया,

विश्वविद्यालय के वार्षिक कार्यक्रम पंचांग में नागार्जुन-जयंती मनायी जाने की तिथि 30 जून अंकित है, जिसे उपर्युक्त संदर्भित पत्र में दर्शाया गया है, जबकि नागार्जुन की जयंती ज्येष्ठ पूर्णिमा को मनायी जाने की परम्परा रही है। स्वयं नागार्जुन अपनी वैचारिकता एवं भावनात्मकता को कबीर के साथ संयुक्त करते हुए कबीर की जयंती (ज्येष्ठ पूर्णिमा) के साथ अपनी जयंती मनाने के पक्ष में थे। उपर्युक्त 30 जून अंग्रेजी की तिथि से सही नहीं है, क्योंकि 1911 ई. (नागार्जुन का जन्मवर्ष) में ज्येष्ठ पूर्णिमा 11 जून को पड़ती है। यही कारण है कि विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग द्वारा 24 जून, 2021 (ज्येष्ठ पूर्णिमा) को कबीर तथा नागार्जुन की जयंती संयुक्त रूप से मनायी गयी। संगोष्ठी का विषय था — 'कबीर तथा नागार्जुन की विद्रोही-चेतना'।

दिनांक 24.06.2021 से पूर्व छात्र-छात्राओं की सक्रिय सहभागिता हेतु ऑनलाइन माध्यम से अन्तरसांस्थानिक निबंध-प्रतियोगिता का आयोजन किया गया तथा श्रेष्ठ लेखन के लिए प्रतिभागियों को पुरस्कृत करने की घोषणा दिनांक 24.06.2021 को की गयी। इसी प्रकार, प्रासंगिक विषय पर छात्र-छात्राओं ने भाषण-प्रतियोगिता के रूप में दीपक कुमार, स्नातकोत्तर हिन्दी

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय
कामेश्वरनगर, दरभंगा-846008



पत्रांक:

दिनांक 07.07.2021

प्रथम सेमेस्टर तथा वीणा कुमारी, स्नातकोत्तर हिन्दी, तृतीय सेमेस्टर आदि ने अपने विचारों द्वारा संगोष्ठी को सार्थक बनाया। इन्हें भी पुरस्कृत किए जाने की घोषणा की गयी।

निबंध-प्रतियोगिता में विभिन्न महाविद्यालयों के साथ कई विश्वविद्यालय-विभागों के 20 से अधिक छात्र-छात्राओं तथा शोधार्थियों ने भाग लिया। पुरस्कृत होनेवाले छात्र-छात्राओं की विवरणी निम्नांकित है :

| स्थान | छात्र-छात्राओं के नाम | कक्षा/सेमेस्टर | वर्ग-क्रमांक | विभाग/महावि०/विषय |
|---|---|---|---|---|
| | | (कबीर-केन्द्रित श्रेष्ठ निबंध-लेखन के प्रतिभागी) | | |
| प्रथम | दीपक कुमार | स्नातकोत्तर हिन्दी प्रथम छमाही | 44 | विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग |
| द्वितीय | अंशु कुमारी | स्नातकोत्तर हिन्दी प्रथम छमाही | 11 | विश्ववि० हिन्दी विभाग |
| तृतीय | भालचन्द्र झा | स्नातकोत्तर अंग्रेजी | 01 | विश्ववि० अंग्रेजी विभाग |
| तृतीय | संजू कुमारी | स्नातकोत्तर अंग्रेजी प्रथम छमाही | 08 | विश्ववि० अंग्रेजी विभाग |
| | | (नागार्जुन-केन्द्रित श्रेष्ठ निबंध-लेखन के प्रतिभागी) | | |
| प्रथम | कल्पना कुमारी | स्नातकोत्तर हिन्दी प्रथम छमाही | 75 | विश्ववि० हिन्दी विभाग |
| द्वितीय | वीणा कुमारी | स्नातकोत्तर हिन्दी तृतीय छमाही | 02 | विश्ववि० हिन्दी विभाग |
| तृतीय | प्रभात कुमार | स्नातकोत्तर अंग्रेजी प्रथम छमाही | 48 | विश्ववि० अंग्रेजी विभाग |
| तृतीय | प्रिंस कुमार (कबीर-केन्द्रित) | स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा तृतीय खंड | 551 | सी.वी.एम. कॉलेज, दरभंगा |

साभार!

07/07/2021

आज दिनांक- 31/07/2021 को विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग द्वारा उपन्यास सम्राट प्रेमचंद की 141वीं जयंती के अवसर पर 'वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रेमचंद के लेखन की प्रासंगिकता' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। संगोष्ठी की अध्यक्षता ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. सुरेन्द्र प्रताप सिंह कर रहे हैं।

क्रम सं. नाम/हस्ताक्षर

1 राजेन्द्र साह
2 [illegible] 31/7/21
[illegible] 31.07.21
3 अखिलेश कुमार
4
5 Akhilesh Kumar Rathore
[illegible]
6
7 Rohan [illegible]
8 [illegible]
9 Ram Pratap Raut - C.M. Law Callage Darbhang
10 Rithik Raj C.M. Sience college
11 [illegible]
12 [illegible]
13 Rousseau Sen Gupta
14 [illegible]
15 [illegible]

2

| | | |
|---|---|---|
| (16) | सुमंत कुमार | सुमंत कुमार |
| (17) | रौशनी कुमारी | रौशनी कुमारी |
| (18) | फूल लक्ष्मी कुमारी | फूल लक्ष्मी कुमारी |
| (19) | वीणा कुमारी | वीणा कुमारी |
| 20. | विकास कुमार महतो | विकास कु० |
| 21 | सौरभ कुमार झा | सौरभ कु० झा |
| 22. | विकाश कुमार भारती | विकाश |
| 23 | कृष्णा अनुराग | कृष्णा अनुराग |
| 24 | अभिषेक कुमार सिंह | अभिषेक कु. सिंह |

II-1- 85

# दिनांक 31 जुलाई, 2021 को विश्वविद्यालय हिंदी विभाग द्वारा
# 'वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रेमचंद के लेखन की प्रासंगिकता'
## विषय पर आयोजित संगोष्ठी की कार्यवाही

आज दिनांक 31.07.2021 को प्रेमचंद की 141वीं जयंती के उपलक्ष्य में विश्वविद्यालय हिंदी विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा तथा प्रेमचंद जयंती समारोह समिति, दरभंगा के संयुक्त तत्त्वावधान में 'वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रेमचंद के लेखन की प्रासंगिकता' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

संगोष्ठी का उद्घाटन मुख्य अतिथि ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा के माननीय कुलपति प्रो० सुरेंद्र प्रताप सिंह ने किया। सर्वप्रथम माननीय कुलपति महोदय एवं आगत अतिथियों का हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो० राजेन्द्र साह ने हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन किया। इस संगोष्ठी में अतिथि के रूप में आगत राजनीति विज्ञान विभाग, ल० ना० मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा के प्राचार्य मुनेश्वर यादव और मैथिली विभाग के प्राचार्य नारायण झा शामिल हुए।

अपने उद्घाटन उद्बोधन में माननीय कुलपति महोदय ने अमर कथाकार प्रेमचंद की जयंती पर उन्हें नमन करते हुए उनके साहित्यिक अवदान पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि प्रेमचंद को सिर्फ छप्पन वर्ष की ही आयु मिली थी लेकिन उन्होंने जिस सच्चाई से साहित्य का सृजन किया वह अपने आप में अभूतपूर्व है। कथा-साहित्य में उनका योगदान अन्यतम है। उन्होंने कहा कि यह सर्वविदित है कि जितनी फिल्में प्रेमचंद के उपन्यासों और कहानियों पर बनीं,उतनी शायद ही भविष्य के किसी कथाकार पर बनीं। आज जरूरत है प्रेमचंद की कहानियों में छिपे संदेशों को अपने जीवन में उतारने की। प्रेमचंद की कई कहानियों का उल्लेख करते हुए उन्होंने 'नमक का दरोगा' पर विशेष प्रकाश डाला। इस कहानी में चित्रित आदर्शवाद को उन्होंने विशेष रूप से व्याख्यायित किया|

विश्वविद्यालय हिंदी विभाग के अध्यक्ष डॉ० राजेन्द्र साह ने कहा कि प्रेमचंद का साहित्य इतना व्यापक है कि बहुत कुछ कहने के बाद भी ऐसा लगता है कि बहुत कुछ छूट गया। सच मायने में प्रेमचंद साहित्य के सच्चे साधक थे। वे अंतिम वक्त तक साहित्य से जुड़े रहे और यही उन्हें सच्चा साधक बनाता है। अभावों में भी उनकी कलम नहीं रुकी। उन्होंने शोषितों के पक्ष में आजीवन लिखा।वस्तुत: प्रेमचंद मूक जनता की आवाज थे। उन्होंने कहा कि प्रेमचंद का समग्र साहित्य अनुभवजन्य है। यही कारण है कि उसमें विश्वसनीयता, आत्मीयता, प्रभावशालिता तथा शाश्वतता विद्यमान है।

प्रेमचन्द जयंती समारोह, दरभंगा के अध्यक्ष डॉ० धर्मेन्द्र कुँवर ने प्रेमचंद को नमन करते हुए कहा समकालीन विश्व व्यवस्था के कारण सम्पूर्ण संसार महाजनी सभ्यता में आकंठ डूबा हुआ है। भोग की संस्कृति और उपभोक्तावादी संस्कृति के कारण सांस्कृतिक और मानवीय मूल्यों का क्षरण हो रहा है।

निर्धनता के कारण भारतीय किसान आत्महत्या करने को मजबूर हो रहे हैं। पितृसत्तात्मकता आज भी समाज में अपनी जड़ें जमाये हुए है। जातिवाद और सम्प्रदायवाद ने आज सम्पूर्ण राष्ट्र को उन्मादित कर दिया है। उन्होंने कहा कि आज की यह सभा आंदोलनरत किसानों को नैतिक समर्थन देती है। प्रेमचंद की कथाओं को कालजयी और शाश्वत बताते हुए उन्होंने कहा कि उस समय जो मूल समस्याएं थीं वह आज भी व्याप्त हैं। इन समस्याओं के निराकरण के वास्ते प्रेरणा के रूप में प्रेमचंद की ओर मुखातिब होना वक्त की मांग है| 1936 में 'प्रगतिशील लेखक संघ' के अपने अध्यक्षीय भाषण में प्रेमचंद ने कहा कि साहित्य को राजनीति से आगे चलने वाली मशाल बनाना चाहिए, जिसमें राजनीति अपनी राह ढूंढ सके। उन्होंने युवाओं को प्रेमचंद के द्वारा जलाई गयी मशाल में अपनी राह तलाशने को कहा।

विश्वविद्यालय हिंदी विभाग के पूर्व अध्यक्ष डॉ० चन्द्रभानु प्रसाद सिंह ने 'प्रेमचंद जयंती समारोह समिति, दरभंगा' की प्रशंसा करते हुए कहा कि दरभंगा में प्रेमचंद से सम्बंधित यह एकमात्र संस्था है। उन्होंने प्रेमचंद की तुलसीदास से तुलना करते हुए कहा कि तुलसीदास के बाद सबसे ज्यादा प्रेमचंद को ही भारतीय महाद्वीप में पढा गया है। भारतीय नवजागरण और हिंदी नवजागरण के प्रतिनिधि लेखक प्रेमचंद हैं। किसान, मजदूर और मध्य वर्ग के बीच से प्रेमचंद की कहानियां प्रस्फुटित हुई हैं। उन्होंने आगे कहा कि एकतरफ वे अंग्रेजी राज से आजादी तो चाहते ही थे लेकिन दूसरी तरफ वे भारतीय नवाबों, शोषकों, जमींदारों, साहूकारों आदि से भी छुटकारा पाना चाहते थे। प्रो० सिंह ने कहा कि प्रेमचंद ने लगातार वैचारिक यात्रा की है। भारतीय किसानों-मजदूरों की त्रासदी को प्रेमचंद उत्कर्ष पर ले जाते हैं। उन्होंने प्रेमचंद को भविष्यद्रष्टा बताया। उन्होंने कहा कि वे मुकम्मल आजादी चाहते थे,जहाँ समतामूलक समाज की स्थापना हो। उन्होंने अपनी कथाओं में यह पहले ही लिख दिया था कि जब अंग्रेजी राज समाप्त हो जाएगा तो देसी अंग्रेज भी दोनों हाथों से गरीबों, मजदूरों, शोषितों और दलितों को लूटेंगे।

कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में शामिल राजनीति विज्ञान विभाग के प्राचार्य प्रो० मुनेश्वर यादव ने प्रेमचंद को सच्चाई का रहस्योद्घाटन करने वाला साहित्यकार बताया। नव उपनिवेशवाद और नव मार्क्सवाद के इस दौर में कैसे दुनिया बदल गयी है उस पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि आज हमारे अस्तित्व पर ही संकट के बादल छाए हैं लेकिन आज इस पर कहीं कोई चिंतन नहीं दीखता। वाणी को विराम देते हुए उन्होंने प्रेमचंद को श्रद्धांजलि अर्पित की।

प्रेमचंद जयंती समारोह समिति के उपाध्यक्ष हरिकृष्ण सहनीजी ने कहा कि प्रेमचंद की रचनाओं में दलित और नारी के प्रश्न उभर कर आये हैं। उन्होंने कहा कि प्रेमचंद न केवल एक लेखक हैं बल्कि स्वयं में ही एक आंदोलन हैं। उन्होंने बीच में चले उस आंदोलन की ओर भी इशारा किया जिसमें प्रेमचंद को 'दलित-विरोधी' घोषित किया गया था पर उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि जो प्रेमचंद को नहीं समझ सके वे ही उन्हें 'दलित-विरोधी' कहते हैं।

विश्वविद्यालय हिंदी विभाग के प्राचार्य डॉ० विजय कुमार ने कहा कि मैं कृषक परिवार से आया हूँ और आज प्रेमचंद को याद करते हुए मैं उन किसानों को भी याद करना चाहता हूँ जो पिछले आठ

महीनों से आंदोलनरत हैं। 'गोदान' की कथावस्तु पर प्रकाश डालते हुए उन्हेंने किसान के मजदूर बनने की त्रासदी पर विचार रखे। उन्होंने सभा में उपस्थित सभी बुद्धिजीवियों के समक्ष यह प्रश्न रखा कि क्या आज हम यह कह सकते हैं कि हम उन किसानों के प्रति सहानुभूति रखते हैं जो पिछले आठ महीनों से आंदोलनरत हैं? अगर यह कहने की सामर्थ्य हम सब में है तो यही प्रेमचंद के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

कार्यक्रम में उपस्थित सी०एम० कॉलेज हिंदी विभाग के अध्यक्ष श्री अखिलेश कुमार राठौड़ ने कहा कि आदर्शवाद और यथार्थवाद का पूर्ण सामंजस्य प्रेमचंद की कथाओं में मिलता है। जयशंकर प्रसाद की जो 'चिंता' है उसे प्रेमचंद ने जिया है। 'नमक का दारोगा' से 'कफन' तक के सफर में प्रेमचंद की कथादृष्टि जैसे बदली है वह पाठक को उत्तेजित करती है। उन्होंने कहा कि प्रेमचंद की पंक्तियों में रस का पूर्ण परिपाक देखा जा सकता है। उन्होंने कहा कि प्रेमचंद हमारी दृष्टि में न केवल एक साहित्यकार हैं अपितु वे हमारे हृदय में कार्ल मार्क्स जैसे राजनीतिज्ञ के रूप में विराजमान हैं। समाज के सबसे निचले पायदान पर खड़े व्यक्ति से लेकर समाज के शीर्ष पर बैठे व्यक्ति तक सब ही प्रेमचंद को पढ़ते हैं। 'गोदान' के मालती-मेहता प्रसंग की व्याख्या करते हुए उन्होंने कहा कि इस प्रसंग को पढ़ते हुए कई बार इस प्रसंग को पढ़ते हुए रोया भी हूँ और अंधेरी रातों में अकेले बैठ कर हँसा भी हूँ।

कार्यक्रम में उपस्थित प्रेमचंद जयंती समारोह समिति के सचिव डॉ० लाल कुमार ने कहा कि आज देश कई समस्याओं से एकसाथ जूझ रहा है। किसानों के आंदोलन और शिक्षा के निजीकरण पर प्रकाश डालते हुए कहा कि प्रेमचंद ने ये चीजें दशकों पहले देख ली थीं। उन्होंने कहा कि प्रेमचंद ने एक सपना देखा था कि देश में वैसे समतामूलक समाज की स्थापना हो जहाँ कोई भी भूखा न सोए, जहाँ अस्पृश्यता की बू न आये। समाज के लिए प्रेमचंद निरन्तर लिखते रहे, जब अंग्रेजों ने 'सोजेवतन' की प्रतियों को सीज कर लिया तब भी प्रेमचंद नहीं रुके और न उनकी कलम रुकी।

धन्यवाद ज्ञापन के दौरान विश्वविद्यालय हिंदी विभाग के सहायक प्राध्यापक श्री अखिलेश कुमार ने कहा कि प्रेमचंद मानवीय संवेदना के कथाकार हैं। वे अपने पात्रों को हमारे समक्ष इस तरह उपस्थित करते हैं जैसे वे बिल्कुल हमारे बीच के हों या हम ही हों। प्रेमचंद की भाषा बिल्कुल सामान्य जन की भाषा है। प्रगतिशील लेखक संघ के अधिवेशन में प्रेमचंद ने साहित्यिक भाषा पर भी चर्चा की थी। उन्होंने कहा कि साहित्यकार वस्तुतः कालजयी पत्रकर होता है। उन्होंने कहा कि आज शोषण का सिर्फ स्वरूप बदल गया है लेकिन शोषक आज भी वहीं हैं जो प्रेमचंद के समय में थे। उन्होंने कहा कि 1908 में राष्ट्रद्रोह का आरोप लगाकर 'सोजेवतन' को सीज कर लिया गया था क्योंकि उसमें भ्रष्टाचार, नारी शोषण आदि पर यथार्थ ढंग से लिखा गया था। उन्होंने संगोष्ठी में शामिल सभी आगंतुकों का आभार व्यक्त किया।

इस संगोष्ठी में विश्वविद्यालय हिंदी विभाग के कनीय शोधप्रज्ञ कृष्णा अनुराग, अभिशेक कुमार सिन्हा, धर्मेन्द्र दास, शोधार्थी दुर्गानन्द ठाकुर, ज्योति कुमारी सहित बड़ी संख्या में छात्र उपस्थित रहे। प्रेमचंद जयंती समारोह समिति के संयुक्त सचिव मुजाहिद आजम, रूसो सेन गुप्ता, मनोज कुमार, हरेराम राज, राम प्रताप आदि भी उपस्थित रहे।

हिन्दुस्तान 06
• मुजफ्फरपुर • रविवार • 01 अगस्त 2021 •

'वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रेमचंद के लेखन की प्रासंगिकता' विषय पर संगोष्ठी का कि[...] गया आयोजन, वक्ताओं ने रखे विचार

# प्रेमचंद का साहित्य सृजन अ[...]तपूर्व : कुलपति

दरभंगा | निज प्रतिनिधि

प्रेमचंद की 141वीं जयंती शनिवार को लनामि विवि के पीजी हिंदी विभाग तथा प्रेमचंद जयंती समारोह समिति, दरभंगा के संयुक्त तत्वावधान में मनायी गयी। इस मौके पर 'वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रेमचंद के लेखन की प्रासंगिकता' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

संगोष्ठी का उद्घाटन मुख्य अतिथि कुलपति प्रो. सुरेंद्र प्रताप सिंह ने किया। कार्यक्रम में हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो. राजेन्द्र साह, प्राचार्य मुनेश्वर यादव व मैथिली विभाग के प्राचार्य नारायण झा भी थे। कुलपति ने कहा कि प्रेमचंद को सिर्फ छप्पन वर्ष की ही आयु मिली थी, लेकिन उन्होंने जिस सच्चाई से साहित्य का सृजन किया वह अपने आप में अभूतपूर्व है। कथा-साहित्य में उनका योगदान अन्यतम है। जरूरत है प्रेमचंद की कहानियों में छिपे संदेशों को अपने जीवन में उतारने की। विवि हिंदी विभाग के अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र साह ने कहा कि प्रेमचंद का साहित्य इतना व्यापक है कि बहुत कुछ कहने के बाद भी ऐसा लगता है कि बहुत कुछ छूट गया। सच मायने में प्रेमचंद साहित्य के सच्चे साधक थे। वे अंतिम वक्त तक साहित्य से जुड़े रहे और यही उन्हें सच्चा साधक बनाता है। अभावों में भी उनकी कलम नहीं रुकी। उन्होंने शोषितों के पक्ष में आजीवन लिखा। प्रेमचन्द जयंती समारोह, दरभंगा के अध्यक्ष डॉ. धर्मेन्द्र कुंवर ने प्रेमचंद की कथाओं को कालजयी और शाश्वत बताते हुए कहा कि उस समय जो मूल समस्याएं थीं वह आज भी व्याप्त हैं। इन समस्याओं के निराकरण के लिए प्रेरणा के रूप में प्रेमचंद की ओर मुखातिब होना वक्त की मांग है। विवि हिंदी विभाग के पूर्व अध्यक्ष डॉ. चन्द्रभानु प्रसाद सिंह ने प्रेमचंद की तुलसीदास से तुल[...] हुए कहा कि तुलसीदास के [...] ज्यादा प्रेमचंद को ही भारतीय [...] में पढ़ा गया है। भारतीय नवजा[...] हिंदी नवजागरण के प्रतिनिधि [...] प्रेमचंद हैं। एक तरफ वे अंग्रे[...] आजादी तो चाहते ही थे लेकि[...] तरफ वे भारतीय नवाबों, शोषकों, जमींदारों, साहूकारों आदि से भी छुटकारा पाना चाहते थे। उन्होंने प्रेमचंद को भविष्यद्रष्टा बताया।

विशिष्ट अतिथि राजनीति विज्ञान विभाग के प्राचार्य प्रो. मुनेश्वर यादव ने प्रेमचंद को सच्चाई का रहस्योद्घाटन करने वाला साहित्यकार बताया। प्रेमचंद जयंती समारोह समिति के उपाध्यक्ष हीरा लाल सहनी ने कहा कि प्रेमचंद न केवल एक लेखक हैं बल्कि स्वयं में ही एक आंदोलन हैं। विवि हिंदी विभाग के प्राचार्य डॉ. विजय कुमार ने 'गोदान' की कथा वस्तु पर प्रकाश डाला। सीएम कॉलेज हिंदी विभाग के अध्यक्ष अखिलेश कुमार राठौड़ ने कहा कि आदर्शवाद और यथार्थवाद का पूर्ण सामंजस्य प्रेमचंद की कथाओं में मिलता है। समिति के सचिव डॉ. लाल कुमार ने किसानों के आंदोलन और शिक्षा के निजीकरण पर प्रकाश डालते हुए कहा कि प्रेमचंद ने ये चीजें दशकों पहले देख ली थीं। धन्यवाद ज्ञापन के दौरान विवि हिंदी विभाग के सहायक प्राध्यापक अखिलेश कुमार ने कहा कि प्रेमचंद की भाषा बिल्कुल सामान्य जन की भाषा है। उन्होंने कहा कि आज शोषण का सिर्फ स्वरूप बदल गया है लेकिन शोषक आज भी वहीं हैं जो प्रेमचंद के समय में थे। संगोष्ठी में विवि हिंदी विभाग के कनीय शोधप्रज्ञ कृष्णा अनुराग, अभिषेक कुमार सिन्हा, धर्मेन्द्र दास, शोधार्थी दुर्गानन्द ठाकुर, ज्योति कुमारी आदि उपस्थित रहे। प्रेमचंद जयंती समारोह समिति के संयुक्त सचिव मुजाहिद आजम, रूसो सेन गुप्ता, मनोज कुमार, हरेराम राज, राम प्रताप आदि भी उपस्थित रहे। मंच संचालन विवि हिंदी विभाग के सह प्राचार्य डॉ. आनन्द प्रकाश गुप्ता ने किया।

## कार्यक्रम

- प्रेमचंद की कहानियों के संदेशों को जीवन में उतारने की अपील
- प्रेमचंद की कथाओं को बताया कालजयी और शाश्वत



संगोष्ठी में शनिवार को विचार व्यक्त करते लनामि विवि के पीजी हिंदी विभा[...] प्रो. राजेन्द्र साह।

मुजफ्फरपुर, रविवार
01.08.2021 | प्रभात खबर 04

पीजी हिंदी विभाग में वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रेमचंद के लेखन [...] प्रासंगिकता विषय पर संगोष्ठी

# प्रेमचंद ने सच्चाई से किया सा[...]त्य सृजन: वीसी

## पीजी हिंदी विभाग में वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रेमचंद के लेखन की प्रासंगिक[illegible] विषय पर संगोष्ठी

# प्रेमचंद ने सच्चाई से किया साहित्य [illegible]जन: वीसी

- प्रेमचंद की कहानियों में छिपे संदेशों को अपने जीवन में उतारने की जरूरत
- कथा साहित्य में प्रेमचंद का अनन्यतम योगदान

प्रतिनिधि,दरभंगा

प्रेमचंद की 141वीं जयंती पर पीजी हिंदी विभाग तथा प्रेमचंद जयंती समारोह समिति के संयुक्त तत्वावधान में 'वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रेमचंद के लेखन की प्रासंगिकता' विषय पर संगोष्ठी हुई. उद्‌घाटन करते हुए कुलपति प्रो. सुरेंद्र प्रताप सिंह ने प्रेमचंद के साहित्यिक अवदान पर प्रकाश डाला. कहा कि प्रेमचंद ने जिस सच्चाई से साहित्य का सृजन किया वह अभूतपूर्व है. कथा-साहित्य में उनका योगदान अनन्यतम है. जितनी फिल्में प्रेमचंद के उपन्यासों और कहानियों पर बनीं, उतना किसी अन्य पर नहीं. कहा कि जरूरत है प्रेमचंद की कहानियों में छिपे संदेशों को अपने जीवन में उतारने की. 'नमक का दरोगा' कहानी में चित्रित आदर्शवाद को उन्होंने विशेष रूप से व्याख्यायित किया.

पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ चन्द्रभानु प्रसाद सिंह ने प्रेमचंद की तुलसीदास से तुलना की. कहा कि तुलसीदास के बाद सबसे ज्यादा प्रेमचंद को ही भारतीय महाद्वीप में पढ़ा गया है. भारतीय नवजागरण और हिंदी नवजागरण के प्रतिनिधि लेखक प्रेमचंद हैं. किसान, मजदूर और मध्यम वर्ग के बीच से प्रेमचंद की कहानियां प्रस्फुटित हुई है. प्रो. सिंह ने कहा कि प्रेमचंद ने लगातार वैचारिक यात्रा की है. भारतीय किसानों-मजदूरों की त्रासदी को प्रेमचंद उत्कर्ष पर ले जाते हैं. वे मुक्कमल आजादी चाहते थे, जहां समतामूलक समाज की स्थापना हो. अपनी कथाओं में पहले ही लिख दिया था, कि जब अंग्रेजी राज समाप्त हो जाएगी तो देसी अंग्रेज भी दोनों हाथों से गरीबों, मजदूरों, शोषितों और दलितों को लूटेंगे. कार्यक्रम में प्रो. मुनेश्वर यादव, हरिकृष्ण सहनी, डॉ विजय कुमार, अखिलेश कुमार राठौड़, डॉ लाल कुमार ने भी विचार रखा. धन्यवाद ज्ञापन करते हुए सहायक प्राध्यापक अखिलेश कुमार ने कहा कि प्रेमचंद मानवीय संवेदना के कथाकार हैं. इससे [illegible] विभागाध्यक्ष प्रो. साह ने अतिथियों [illegible] स्वागत किया. संचालन डॉ आनन्द [illegible] गुप्ता कर रहे थे. संगोष्ठी में [illegible] अनुराग, अभिषेक कुमार सिन्हा, धर्मेन्द्र दास, दुर्गानन्द ठाकुर, ज्योति कुमारी, मुजाहिद आजम, रूसो सेन गुप्ता, मनोज कुमार, हरेराम राज, राम प्रताप आदि शामिल रहे.

### मूक जनता की आवाज थे साहित्यकार प्रेमचंद : डॉ राजेंद्र साह

विभागाध्यक्ष डॉ राजेन्द्र साह ने कहा कि प्रेमचंद का साहित्य इतना व्यापक है कि बहुत कुछ कहने के बाद भी ऐसा लगता है बहुत कुछ छूट गया. सच मायने में प्रेमचंद साहित्य के सच्चे साधक थे. वे अंतिम वक्त तक साहित्य से जुड़े रहे. अभावों में भी उनकी कलम नहीं रुकी. शोषितों के पक्ष में आजीवन लिखा. उनके साहित्य में आम जन जीवन का दर्शन होता है. वस्तुत: प्रेमचंद मूक जनता की आवाज थे.

कार्यक्रम में ऑनलाइन विचार रख रहे कुलपति प्रो. एसपी सिंह व मौजूद विभागाध्यक्ष प्रो. राजेंद्र साह, पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. डॉ चंद्रभानु प्रसाद सिंह, अखिलेश कुमार.

### जयंती पर संगोष्ठी सह कथावाचन आयोजित

**दरभंगा.** हिन्दी समाहार मंच की ओर से मुंशी प्रेमचंद की जयंती पर संगोष्ठी सह कथा वाचन किया गया. कथावाचन के साथ-साथ उसकी समीक्षा प्रो. आशुतोष कुमार वर्मा ने की. डॉ मित्रनाथ झा ने कहा कि नयी पीढ़ी के साहित्यकार के लिए प्रेमचंद के साहित्य को पढ़ना जरूरी ताकि उनमें साहित्य ऊर्जा का संचार हो. चंद्रेश ने कहा कि प्रेमचंद जीवंत साहित्यकार थे. गोदान महाकाव्यात्मक उपन्यास है. ई. दीपक कुमार सिन्हा ने कहा कि प्रेमचंद युगद्रष्टा साहित्यकार थे. कथागोष्ठी में अमिताभ कुमार सिन्हा, रितु प्रज्ञा, चंद्र मोहन पोद्दार, सुधीर कुमार सिंह, मुश्ताक एकबाल, एनके साहु, सतीश चंद्र भगत, मंजर सिद्दीकी, शंभु नारायण चौधरी, शंकर झा, प्रकाश चंद्र प्रभाकर आदि ने भाग लिया. संचालन अमिताभ सिंहा तथा धन्यवाद ज्ञापन हीरा लाल सहनी ने किया.

### प्रेमचंद के साहित्य में समकालिक संदर्भ विषय पर परिचर्चा आज

**दरभंगा.** प्रेमचंद की जयन्ती पर कल एक अगस्त को हिन्दी साहित्य भारती की प्रदेश इकाई की ओर से ऑनलाइन परिचर्चा का आयोजन किया जाएगा. भोपाल से जाने माने कवि व समालोचक प्रो. सुधीर कुमार शर्मा, लखनऊ विश्वविद्यालय के प्रो. काली चरण स्नेही, पूर्व मानविकी संकायाध्यक्ष डॉ किरण शंकर प्रसाद, प्रेमचंद के साहित्य में समकालिक संदर्भ विषय पर चर्चा करेंगे. यह जानकारी संगठन के प्रदेश अध्यक्ष डॉ दिनेश प्रसाद साह ने दी है.

### प्रेमचंद की म[illegible] में अपनी राह तलाशें युवा : डॉ धर्मेंद्र

डॉ धर्मेन्द्र कुंवर ने प्रे[illegible] कथाओं को कालजयी और शाश्वत बताते हुए कहा कि उस समय जो मूल समस[illegible], आज भी व्याप्त है. इन समस्याओं के निराकरण के वास्ते प्रेरणा के रूप में प्रेम[illegible] और मुखातिब होना वक्त की मांग है. 1936 में 'प्रगतिशील लेखक संघ' के अ[illegible]ीय भाषण में प्रेमचंद ने कहा था कि साहित्य को राजनीति से आगे चलने वाली म[illegible]ना चाहिए, जिसमें राजनीति अपनी राह ढूंढ सके. डॉ कुंवर ने युवाओं को प्रेमचंद [illegible]लाई गयी मशाल में अपनी राह तलाशने को कहा.

### प्रेमचंद की र[illegible] राष्ट्र के लिए ऊर्जा का स्रोत : डॉ सुमन

**दरभंगा.** प्रेमचंद ज[illegible]र जन संस्कृति मंच की ओर से प्रो. अवधेश कुमार सिंह एवं प्रधानाचार्य डॉ शिव[illegible] यादव की संयुक्त अध्यक्षता में एलसीएस कॉलेज में मौजूदा चुनौतियां और प्रेमच[illegible] सपनों का भारत विषय पर संगोष्ठी हुई. डॉ सुरेन्द्र प्रसाद सुमन ने कहा कि आज [illegible] सामाजिक-राजनीतिक परिस्थिति में प्रेमचंद की रचनाएं राष्ट्र के लिए ऊर्जा [illegible] है. प्रेमचंद जीवनपर्यंत भारत की मूलभूत आजादी के लिए संघर्ष करते रहे. इ[illegible]रीय क्षेत्रीय केंद्र निदेशक डॉ शंभू शरण सिंह ने कहा कि प्रेमचंद के साहित्य [illegible] पढ़कर भारत को संपूर्णता के साथ जाना जा सकता है. आलोचक वीरेन्द्र [illegible] ने कहा कि प्रेमचन्द 20वीं सदी के सबसे बड़े रचनाकार हैं. जनसंस्कृति मंच के [illegible] कार्यकारी अध्यक्ष प्रो. रविभूषण ने कहा कि अभिव्यक्ति पर पाबंदी के दौर में प्रेम[illegible] प्रासंगिकता और भी बढ़ जाती है. संगोष्ठी में रोहित कुमार यादव, प्रो. एम अंस[illegible] करीब 250 प्रतिभागियों ने भाग लिया. धन्यवाद ज्ञापन डॉ मिथिलेश कुमा[illegible] ने किया.

### जयंती पर [illegible] एलएसएम कॉलेज में कार्यक्रम

**दरभंगा.** एमएल[illegible] कॉलेज में हिंदी, मैथिली एवं संस्कृत विभाग की ओर से संगोष्ठी हुई. इसमें [illegible] ने प्रेमचंद को आज के संदर्भ में हिंदी का प्रसिद्ध रचनाकार बताया. अध्यक्षता [illegible] विभागाध्यक्ष डॉ रमाकांत कुंवर, संचालन डॉ सतीश कुमार सिंह ने किया. डॉ [illegible] मिश्र, डॉ कैलाश नाथ मिश्र, डॉ रामचंद्र सिंह, डॉ शांतिनाथ सिंह, डॉ उषा चौ[illegible] मीनू कुमारी, डॉ भवनाथ झा आदि कार्यक्रम में शामिल थे.

# प्रेमचंद की कहानियों में छिपे संदेश जीवन में उतारें : कुलपति

## ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय स्नातकोत्तर हिंदी विभाग की ओर से प्रेमचंद की 141वीं जयंती पर संगोष्ठी आयोजित

**जासं, दरभंगा :** प्रेमचंद की 141 वीं जयंती के अवसर अवसर पर शनिवार को ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, स्कूल-कालेज समेत शिक्षण संस्थानों में संगोष्ठी और कार्यक्रम आयोजित किए गए। ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय स्नातकोत्तर हिंदी विभाग के तत्वावधान में वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रेमचंद की लेखन की प्रासंगिकता विषय संगोष्ठी आयोजित किया गया। संगोष्ठी का उद्घाटन कुलपति प्रो. सुरेंद्र प्रताप सिंह ने किया। आगत अतिथियों का स्वागत हिंदी विभागाध्यक्ष प्रो. राजेन्द्र साह कर रहे थे। संगोष्ठी में मुख्य अतिथि के रूप में राजनीति विज्ञान विभाग के प्राचार्य मुनेश्वर यादव और मैथिली विभाग के प्राचार्य नारायण झा शामिल थे। कुलपति प्रो. सुरेंद प्रताप सिंह ने कहा दि प्रेमचंद के उपन्यासों और कहानियों पर जितनी फिल्में बनीं है,उतनी शायद ही भविष्य के किसी कथाकार पर बनीं। कहा प्रेमचंद की कहानियों में छिपे संदेशों को अपने जीवन में उतारने की जरूरत है।



संगोष्ठी को संबोधित करते विभागाध्यक्ष प्रो. राजेंद्र साह • जाग

• महात्मा गांधी कालेज में प्रेमचंद जयंती के अवसर पर प्रेमचंद की रचना और हमारा समाज विषय पर हुई राष्ट्रीय संगोष्ठी



आनलाइन कार्यक्रम में शामिल कुलपति प्रो. एसपी सिंह • जागरण



जयंती समारोह में मंचासीन नगर विधायक संजय सरावगी व अन्य • जागरण

**प्रेमचंद साहित्य के सच्चे साधक थे :** विश्वविद्यालय हिंदी विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. राजेन्द्र साह ने कहा प्रेमचंद का साहित्य इतना व्यापक है कि बहुत कुछ कहने के बाद भी ऐसा लगता है कि बहुत कुछ छूट गया। सच मायने में प्रेमचंद साहित्य के सच्चे साधक थे। वे अंतिम वक्त तक साहित्य से जुड़े रहे और यही उन्हें सच्चा साधक बनाता है। अभावों में भी उनकी कलम नहीं रुकी। उन्होंने शोषितों के पक्ष में आजीवन लिखा। प्रेमचंद जयंती समारोह दरभंगा के अध्यक्ष डा. धर्मेन्द्र कुंवर ने कहा समकालीन विश्व व्यवस्था के कारण संसार महाजनी सभ्यता में आकंठ डूबा हुआ है। उपभोक्तावादी संस्कृति के कारण सांस्कृतिक और मानवीय मूल्यों का क्षरण हो रहा है।

**तुलसीदास के बाद सबसे ज्यादा प्रेमचंद को भारतीय महाद्वीप में पढ़ा गया :** विश्वविद्यालय हिंदी विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. चन्द्रभानु प्रसाद सिंह ने कहा तुलसीदास के बाद सबसे ज्यादा प्रेमचंद को ही भारतीय महाद्वीप में पढा गया है। भारतीय नवजागरण और हिंदी नवजागरण के प्रतिनिधि लेखक प्रेमचंद हैं। किसान, मजदूर और मध्य वर्ग के बीच से प्रेमचंद की कहानियां प्रस्फुटित हुई हैं। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में शामिल राजनीति विज्ञान विभाग के प्राचार्य प्रो. मुनेश्वर यादव ने प्रेमचंद को सच्चाई का रहस्योद्घाटन करने वाला साहित्यकार बताया। कहा आज हमारे अस्तित्व पर ही संकट के बादल छाए हैं, लेकिन आज इस पर कहीं कोई चिंतन नहीं दीखता। उन्होंने प्रेमचंद को श्रद्धांजलि अर्पित की।

**प्रेमचंद की रचनाओं में दलित और नारी के प्रश्न उभर कर आए हैं :** प्रेमचंद जयंती समारोह समिति के उपाध्यक्ष हरिकृष्ण सहनी ने कहा कि प्रेमचंद की रचनाओं में दलित और नारी के प्रश्न उभर कर आए हैं। विश्वविद्यालय हिंदी विभाग के प्राचार्य डा. विजय कुमार ने कहा कि मैं कृषक परिवार से आया हूं और आज प्रेमचंद को याद करते हुए मैं उन किसानों को भी याद करना चाहता हूं जो पिछले आठ मही से आंदोलनरत हैं। सीएम कालेज दी भाग के अध्यक्ष अखिलेश कुर राठौड़ ने कहा कि आदर्शवाद औथार्थवाद का पूर्ण सामंजस्य प्रेमचंद कथओं में मिलता है। कहा कि प्रेमंद की पंक्तियों में रस का पूर्ण परिपाकखा जा सकता है। प्रेमचंद जयंती मारोह समिति के सचिव डा. लालकुमार ने कहा समाज के लिए प्रेम निरंतर लिखते रहे। विश्वविद्यालयंदी विभाग के सहायक प्राध्यापक खिलेश कुमार ने कहा कि प्रेमचंद वीय संवेदना के कथाकार हैं। वे अ पात्रों को हमारे समक्ष इस तरह स्थित करते रहे, जैसे वे बिल्कुल रे बीच के हों या हम ही हों। प्रेमकी भाषा बिल्कुल सामान्य जन की है। मंच संचालन विश्वविद्यालय ी विभाग के सह प्राचार्य डा. अ प्रकाश गुप्ता ने किया। संगोर्में कृष्णा अनुराग, अभिषिके कुमार सिन्हा, धर्मेन्द्र दास, शोधार्थी दुर्गानन्द ठाकुर, ज्योति कुमारी, प्रेमचंद जयंती समारोह समिति के संयुक्त सचिव मुजाहिद आजम, रूसो सेन गुप्ता, मनोज कुमार, हरेराम राज, राम प्रताप भी मौजूद थे।

**प्रतिभागियों को किया गया सम्मानित :** भाषण प्रतियोगिता में प्रथम पदम श्री, द्वितीय अभिषेक प्रसाद, तृतीय मनोज कुमार मिश्रा, लेख में प्रथम स्थान राकेश कुमार, सुषमा कुमारी, सपना कुमारी को पुरस्कृत किया गया। सभी पुरस्कृत छात्रों को महात्मा गांधी का मोमेंटो एवं प्रमाण पत्र अतिथियों के द्वारा प्रदान किया गया। पुरस्कृत छात्र छात्राओं को कालेज की ओर से संजय सरावगी ने अध्ययनरत छात्र छात्राओं को शिक्षण शुल्क माफ करने की घोषणा की। कार्यक्रम में डा. भृगु प्रसाद, कालेज शिक्षक प्रतिनिधि मदन लाल केवट, उत्तिम लाल साहू, डा. अजय कुमार, डा. ज्वाला चंद्र चौधरी, ममता रानी अग्रवाल, अविनाश कुमार, मनीष कुमार प्रेम कुमार, रामनाथ साह, नुरुल हसन, मोदी नारायण मंडल, राजकुमार साह बलेंदर प्रसाद , शत्रुघ्न प्रसाद साह, चंद्रा कर्ण समेत आदि मौजूद थे।

**प्रेमचंद का साहित्य आज भी जीवंत : प्राचार्य :** महात्मा गांधी कालेज हिंदी विभाग के द्वारा शनिवार को प्रेमचंद जयंती पर राष्ट्रीय संगोष्ठी हुई। प्रेमचंद की रचना और हमारा समाज विषय पर आयोजित संगोष्ठी में बीज वक्ता के रूप में पूर्व मानविकी संकायाध्यक्ष व हिंदी विभागाध्यक्ष डा. प्रभाकर पाठक ने कहा व्यक्ति जैसा होता है, वह समाज को वैसा ही परोसता है। उन्होंने दो बैलों की कथा के हीरा और मोती प्रसंगों को उद्घाटित किया, गोदान के पात्र गोबर और धनिया के बारे में हंसी के प्रसंगों पर प्रकाश डाला। प्राचार्य डा. रामदेव चौधरी ने कहा प्रेमचंद का साहित्य आज भी जीवंत है। कहा उनकी प्रमुख रचनाएं पंच परमेश्वर, नमक का दरोगा आदि समाज में जो निराशावादी लोग हैं उसे आशावादी बनने के लिए पढ़ना जरूरी है। डा. अजीत कुमार चौधरी ने कहा प्रेमचंद की रचना आज के समाज के लिए काफी ही प्रेरणादायक है। सचिव शासी निकाय डा. हरि नारायण सिंह ने प्रेमचंद की अनुपम कृति गोदान वर्णित किसानों की समस्या को रेखांकित किया। विभागाध्यक्ष वाणिज्य विभाग अजीत कुमार सिंह ने प्रेम शब्द की व्याख्या उनकी प्रसिद्ध रचना दो बैलों की कथा में हीरा और मोती के बीच प्रेम पर प्रकाश डाला। विधायक सह अभिषद सदस्य सह शासी निकाय अध्यक्ष संजय सरावगी ने कहा प्रेमचंद की रचनाओं से प्रेरणा लेने की जरूरत है। कहा सदैव ऊंचे सोच रखकर ही हम समाज एवं राष्ट्र को उन्नति के शिखर पर ले जा सकते हैं।

## विकृत सामाजिक–राजनीतिक परिस्थिति में प्रेमचंद की रचनाएं राष्ट्र के लिए ऊर्जा का स्रोत

एमसीएस कालेज और जन संस्कृति मंच के संयुक्त तत्वावधान में प्रेमचंद की 141 वीं जयंती समारोह के अवसर पर आनलाइन तथा आफलाइन माध्यम से राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित किया गया। इसकी अध्यक्षता जन संस्कृति मंच के जिलाध्यक्ष प्रो .अवधेश कुमार सिंह और प्राचार्य डा . शिवनारायण यादव ने की। मौजूदा चुनौतियां और प्रेमचंद के सपनों का भारत विषय पर आयोजित संगोष्ठी में समकालीन चुनौक संपादक और जन संस्कृति मंच के रीय कार्यकारिणी सदस्य डा . सुरेन्द्रसाद सुमन ने कहा आज की विकृत साजिक–राजनीतिक परिस्थिति में प्रेमचंकी रचनाएं संपूर्ण राष्ट्र के लिए ऊर्जा स्रोत हैं। प्रेमचंद गुलाम भारत में उत आजाद भारत के प्रथम परिकल्पक। वे जीवनपर्यंत भारत की मूलभूत अदी के लिए संघर्ष करते रहे। इग्नू के क्षेत्रीय निदेशक डा . एसएस . सिंह दरभंगा ने कहा प्रेमचंद के साहित्य को पढ़कर भारत को संपूर्णता के साथ जाना जा सकता है। वे समतामूलक समाज की स्थापना के लिए रचनात्मक स्तर पर जीवनभर लड़ते रहे। आज की पीढ़ी के लिए उनकी रचनाएं किसी प्रकाश–पुंज से कम नही है। संगोष्ठी के प्रमुख वक्ता सुप्रसिद्ध मार्क्सवादी आलोचक वीरेन्द्र यादव ने कहा प्रेमचंद जहां एक ओर सामंतवादी शक्ति से लड़ रहे थे, तो दूसरी ओर वे सामाजिक विषमता के खिलाफ संघर्ष कर रहे थे। प्रेमचंद बीसवी सदी के सबसे बड़े रचनाकार हैं। प्रेमचंद ने हिन्दी कथा साहित्य के परंपरागत सौंदर्यशास्त्र को बदल दिया। जन संस्कृति मंच के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष प्रो . रविभूषण ने कहा अभी जब हमारी अभिव्यक्ति पर पाबंदी लगाई जा रही है, तब प्रेमचंद की प्रासंगिकता और भी अधिक बढ़ जाती है। वे अंग्रेजी गुलामी के दौर में भी सच बोलने से बाज नही आए। आज राष्ट्र कई मौजूदा संकटों और चुनौतियों से गुजर रहा है। स्वागत भाषण जन संस्कृति मंच के जिला सचिव डा . रामबाबू आर्य ने किया। राष्ट्रीय संगोष्ठी में छात्र नेता रोहित कुमार यादव, भोला जी, प्रो . एम अंसारी, वरीय प्राध्यापक डा . मिथिलेश कुमार यादव समेत अन्य मौजूद थे।

29

कार्यक्रम • एलएनएमयू के पीजी हिंदी विभाग में प्रेमचंद के लेखन की प्रासंगिकता विषय पर हुई संगोष्ठी

# प्रेमचंद की कहानियों में छिपे संदेशों को अपने जीवन में उतारने की जरूरत : प्रो. एसपी सिंह

एजुकेशन रिपोर्टर | दरभंगा

प्रेमचंद की 141वीं जयंती पर कई शैक्षणिक संस्थानों में शनिवार को कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। एलएनएमयू के पीजी हिंदी विभाग व प्रेमचंद जयंती समारोह समिति के संयुक्त तत्त्वावधान में वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रेमचंद के लेखन की प्रासंगिकता विषय पर संगोष्ठी हुई। वीसी प्रो. एसपी सिंह ने कहा कि प्रेमचंद को सिर्फ छप्पन वर्ष की ही आयु मिली थी। लेकिन, उन्होंने जिस सच्चाई से साहित्य का सृजन किया वह अपने आप में अभूतपूर्व है। कथा-साहित्य में उनका योगदान अन्यतम है। उन्होंने कहा कि यह सर्वविदित है कि जितनी फिल्में प्रेमचंद के उपन्यासों और कहानियों पर बनीं, उतनी शायद ही भविष्य के किसी कथाकार पर बनीं। आजे जरूरत है प्रेमचंद की कहानियों में छिपे संदेशों को अपने जीवन में उतारने की। प्रेमचंद की कई कहानियों का उल्लेख करते हुए उन्होंने '''नमक का दरोगा''' पर विशेष प्रकाश डाला। इस कहानी में चित्रित आदर्शवाद को उन्होंने विशेष रूप से व्याख्यायित किया।

## सामाजिक-राजनीतिक परिस्थिति में प्रेमचंद की रचनाएं राष्ट्र के लिए ऊर्जा का स्रोत : डॉ. सुरेन्द्र

एलसीएस कॉलेज में प्रो.अवधेश कुमार सिंह व डॉ. शिवनारायण यादव की अध्यक्षता में जन संस्कृति मंच की ओर से प्रेमचंद-जयंती समारोह पर राष्ट्रीय संगोष्ठी हुई। मौजूदा चुनौतियां और प्रेमचंद के सपनों का भारत। डॉ. रामबाबू आर्य ने स्वागत भाषण दिया। समकालीन चुनौती के संपादक और जन संस्कृति मंच के राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य डॉ. सुरेन्द्र प्रसाद सुमन ने विषय-प्रवेश कराया। उन्होंने कहा कि आज की विकृत सामाजिक-राजनीतिक परिस्थिति में प्रेमचंद की रचनाएं संपूर्ण राष्ट्र के लिए ऊर्जा का स्रोत हैं। प्रेमचंद गुलाम भारत में उत्पन्न आजाद भारत के प्रथम परिकल्पक थे। वे जीवनपर्यंत भारत की मूलभूत आजादी के लिए संघर्ष करते रहे। मौके पर डॉ. एसएस सिंह, वीरेन्द्र यादव, प्रो. रविभूषण, छात्र नेता रोहित कुमार, प्रो. एम अंसारी विचार रखे। धन्यवाद ज्ञापन डॉ. मिथिलेश कुमार यादव ने किया।

## प्रेमचंद की 141वीं जयंती पर कई शैक्षणिक संस्थानों में कार्यक्रम का हुआ आयोजन


एलएनएमयू पीजी में संबोधित करते हेड प्रो. राजेन्द्र साह।

## व्यापक है प्रेमचंद का साहित्य : डॉ. राजेन्द्र साह

हेड डॉ. राजेन्द्र साह ने कहा कि प्रेमचंद का साहित्य इतना व्यापक है कि बहुत कुछ कहने के बाद भी ऐसा लगता है कि बहुत कुछ छूट गया। सच मायने में प्रेमचंद साहित्य के सच्चे साधक थे। वे अंतिम वक्त तक साहित्य से जुड़े रहे। यही उन्हें सच्चा साधक बनाता है। प्रेमचन्द जयंती समारोह के अध्यक्ष डॉ. धर्मेन्द्र कुमर कहा कि समकालीन विश्व व्यवस्था के कारण सम्पूर्ण संसार महाजनी सभ्यता में आकंठ डूबा हुआ है। भोग व उपभोक्तावादी संस्कृति के कारण सांस्कृतिक और मानवीय मूल्यों का क्षरण हो रहा है। पूर्व अध्यक्ष डॉ. चन्द्रभानु प्रसाद सिंह ने प्रेमचंद की तुलसीदास से तुलना करते हुए कहा कि तुलसीदास के बाद सबसे ज्यादा प्रेमचंद को ही भारतीय महाद्वीप में पढ़ा गया है। मौके पर प्रो. मुनेश्वर यादव, हरिकृष्ण सहनी, डॉ. विजय कुमार, अखिलेश कुमार राठौड़ ने विचार रखे। संगोष्ठी में कनीय शोधप्रज्ञ कृष्णा अनुराग, अभिशेक कुमार सिन्हा, धर्मेन्द्र दास, शोधार्थी दुर्गानन्द ठाकुर, ज्योति कुमारी मुजाहिद आजम, रूसो सेन गुप्ता, मनोज कुमार, हरेराम राज, राम प्रताप आदि मौजूद थे।

## असत्य को त्याग कर सत्य को अपनाने से होगा सबका भला : डॉ. प्रभाकर पाठक

महात्मा गांधी कॉलेज में हिंदी विभाग की ओर से आयोजित प्रेमचंद की रचना और हमारा समाज विषयक गोष्ठी में बीज वक्ता के रूप में डॉ. प्रभाकर पाठक ने प्रेमचंद की रचनाओं को याद करते हुए कहा कि व्यक्ति जैसा होता है वह समाज को वैसा ही परोसता है। उन्होंने दो बैलों की कथा, गोदान महाकाव्य में सदी के युगीन किसानों की समस्या, गोदान के पात्र गोबर और धनिया के बारे में हंसी के प्रसंगों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कृष्ण और अर्जुन के प्रसंग के सहारे समाज को बनाने पर बल देते हुए उपस्थित शिक्षकों, छात्र छात्राओं को असत्य को त्याग कर सत्य को अपनाने पर बल दिया। विधायक संजय सरावगी, प्राचार्य डॉ. रामदेव चौधरी, डॉ अजीत कुमार चौधरी, डॉ. हरि नारायण सिंह, डॉ. अजीत कुमार सिंह, डॉ भृगु प्रसाद, मदन लाल कैवट आदि ने विचार रखे। भाषण प्रतियोगिता में प्रथम पदम श्री, द्वितीय अभिषेक प्रसाद, तृतीय मनोज कुमार मिश्रा, लेख में प्रथम स्थान राकेश कुमार, सुषमा कुमारी, सपना कुमारी प्रतियोगिता में पुरस्कृत किए गए।

(28)

# LALIT NARAYAN MITHILA UNIVERSITY
## KAMESHWARNAGAR, DARBHANGA

### Annexure IV:

List of Events conducted during the period 1st July 2020 - till date

| S. No. | Date | Title of the Event | Department | Nature ONLINE/ OFFLINE HYBRID | Keynote Speakers with Address | No. of Participants | Link |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 14/09/2020 | 'राजभाषा हिन्दी के समक्ष उसके कार्यान्वयन की चुनौतियाँ | हिन्दी विभाग | ऑफलाइन | डॉ. राजेन्द्र साह अध्यक्ष, विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग, ल. ना. मि. वि. | 75 | प्रोसिडिंग-1-2 पेपर-कटिंग-17- |
| 2 | 23/09/2020 | 'राष्ट्रकवि दिनकर की जनचेतना' | हिन्दी विभाग | ऑफलाइन | डॉ. राजेन्द्र साह अध्यक्ष, विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग, ल. ना. मि. वि. | 65 | प्रोसिडिंग-1 [illegible] पेपर कटिंग- 1-2 21-2 |
| (4) | 09/04/2021 | 'महापंडित राहुल सांकृत्यायन जयंती समारोह' (राहुल सांकृत्यायन पर केंद्रित निबंध प्रतियोगिता') | हिन्दी विभाग | ऑफलाइन/ ऑनलाइन | डॉ. चन्द्रभानु प्र. सिंह पूर्व अध्यक्ष, विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग, ल. ना. मि. वि., दरभंगा | 115 | http://meet.go com/ois-agw tqm प्रोसिडिंग- पेपर-कटिंग- फोटोग्रा |
| | | | | | | | |
| (3) | 10.01.2021 | विश्वहिन्दी दिवस | हिन्दी विभाग | ऑफलाइन | प्रो० प्रभाकर पाठक | 39 | प्रोसिडिंग- 1-2 पेपर-कटिंग-1 फोटोग्राफ-3 |

प्रो० (डॉ०) राजेन्द्र साह
अध्यक्ष
विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग
ललितनारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

2/8/21

(27)

14.09.2020

आज दिनांक 14.09.2020 को हिन्दी दिवस के अवसर पर 'राजभाषा हिन्दी के समक्ष उसके कार्यान्वयन की चुनौतियाँ' विषय पर विभागाध्यक्ष डॉ० राजेन्द्र साह की अध्यक्षता में विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग में संगोष्ठी आयोजित हो रही है :

| क्रमसं. | नाम | हस्ताक्षर |
|---|---|---|
| 1. | अखिलेश कुमार | अखिलेश कुमार 14/09/20 |
| 2. | [illegible] | |
| 3. | [illegible] 14/9/2020 | |
| 4. | उमेश कुमार शर्मा 14/9/20 | |
| 5. | विजय कुमार | [illegible] 14.09.2 |
| 6. | शंकर कुमार | शंकर कुमार 14/9/2020 |
| 7. | हरि ओम कुमार साह | [illegible] 14/9/2020 |
| 8. | पार्वती कुमारी | [illegible] 14/9/2020 |
| 9. | खुशबू कुमारी 14.9/2020 | |
| (10) | शम्भु कुमार | [illegible] |
| 11 | सूर्य नारायण यादव | [illegible] |
| 12. | विकास कुमार महतो | Vikash [illegible] |
| 13. | दुर्गानन्द ठाकुर | Durganand Thakur |
| 14 | गौरी शंकर यादव | गौरी शंकर यादव |
| 15. | ओम प्रकाश निराला | Om Prakash Nirala |
| 16. | विकाश कुमार भारती | Vikash Kr Bharti |
| 17. | नेहा कुमारी | नेहा कुमारी 14.09.2020 |
| 18 | राघव कुमार झा | [illegible] |
| 19. | रंजीत कुमार सिंह | रंजीत कु० सिंह |

20 सुजीत कुमार तिवारी — Shuf
21 सुमंत कुमार — Sumant kr
22 कुमारी सोनी — कुमारी सोनी
23 प्रियंका कुमारी — प्रियंका कुमारी
24 पूजा कुमारी — पूजा कुमारी
25 दिव्या भारती Sentv- — दिव्या भारती
26 अंजू कुमारी — अंजू कुमारी
27. सियाराम मुखिया — (शोधार्थी) — Seyaram
28. नीतू कुमारी — Nitu Kumari

राजेन्द्र साह
14.09.2020

उपर्युक्त संगोष्ठी का प्रकाशित समाचार 'अखबारों के आइने में' वाली पंजी की पृष्ठ संख्या — 54–56 पर द्रष्टव्य ।

26

www.jagran.com

# कैंपस जागरण

## हिंदी व्यावहारिक स्तर पर मजबूत, फिर भी चुनौतियां बरकरार : डॉ. राजेंद्र

जासं, दरभंगा : हिंदी दिवस के मौके पर सोमवार को ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग की ओर से राजभाषा हिंदी के समक्ष उसके कार्यान्वयन की चुनौतियां विषय पर संगोष्ठी आयोजित की गई। इसकी अध्यक्षता हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. राजेंद्र साह ने की। कहा कि हिंदी व्यावहारिक स्तर पर मजबूत भाषा बन गई है। लेकिन, इसके सम्यक विकास में क्षेत्रीयता, बोलियों के स्वरूप की जटिल स्थिति, अनुवाद की जटिलता एवं प्रचार-प्रसार से जुड़ी हुई कठिनाइयां इसकी चुनौतियों के केंद्र में रही है। संकीर्णता और क्षेत्रीयता की समस्या ने हिंदी की राजभाषा को कई रूपों में प्रभावित किया है। बाजारवाद, विज्ञापन, वैश्विक प्रसार और अनेक प्रकार की व्यवस्था से जुड़ी चुनौतियों पर प्रो. साह ने चर्चा की। प्राध्यापक डॉ. विजय कुमार ने हिंदी भाषा के मुद्दे को सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक परिप्रेक्ष्य से जोड़कर उसके विकास की संभावनाओं पर गहरा अपने विचार रखें। उन्होंने बताया कि हिंदी जनता की भाषा के रूप में राजभाषा बनी है। डॉ. सुरेंद्र प्रसाद सुमन ने कहा कि हिंदी जीवित मनुष्य की जीवित भाषा है। जब हिंदी ही हमारी सांसों और जीवन से जुड़ी भाषा रही है। इसके और हमारे अस्तित्व की कल्पना ही नहीं की जा सकती। डॉ. अ... प्रकाश गुप्ता ने राजभाषा हिंदी... संवैधानिक प्रावधानों की विस्... से चर्चा की। राजभाषा हिंदी... विकास की ऐतिहासिक स्थिति... प्रकाश डाला। अखिलेश कुमा... भारतवर्ष की भाषिक विविधता... पर संगोष्ठी में उपस्थित लो... संबोधित किया। डॉ. उमेश... शर्मा ने हिंदी दिवस पर हिंदी... संवैधानिक प्रावधानों की चर्चा... और उसके वैश्विक स्वरूप की... ध्यान दिलाया। कार्यक्रम के ... शोधप्रज्ञ शंकर कुमार ने ... पाठ किया, जबकि शोधप्रज्ञ हरि... कुमार, खुशबू कुमारी, पार्वती कु... एवं सियाराम मुखिया हिंदी भा... अपने-अपने विचार र...



छात्र-छात्राओं को संबोधित करते अतिथि • जागरण

- लनामिविवि में राजभाषा हिंदी के समक्ष उसके कार्यान्वयन की चुनौतियां विषय पर संगोष्ठी

### हिंदी राष्ट्रीय एकता की प्रतीक

दरभंगा : राष्ट्रभाषा हिंदी विकास परिषद की ओर से सोमवार को आदर्श हिंदी पुस्तकालय में साहित्यकार हीरा लाल सहनी की अध्यक्षता में हिंदी दिवस कार्यक्रम हुआ। सहनी ने कहा कि हिंदी राष्ट्रीय एकता की प्रतीक है। मौके पर डॉ. मदन लाल सोनू, डॉ. रवींद्र सिंह सहित अन्य लोग मौजूद थे।

हिंदी दिवस पर कार्यक्रम में शामिल छात्र-छात्राएं • जागरण

हिंदी के विकास पर जोर • हिंदी दिवस पर सामाजिक दूरी के साथ कई शिक्षण संस्थानों में कार्यक्रम आय

# क्षेत्रीयता, अनुवाद की जटिलता व प्रचार-प्रसार कमी के कारण हिंदी के विकास में हो रही कठिना

## एलएनएमयू के पीजी हिंदी विभाग में हिंदी के महत्व पर की गई परिचर्चा

एजुकेशन रिपोर्टर।दरभंगा

एलएनएम( के पीजी हिंदी विभाग में सोमवार को हिंदी दिवस पर सामाजिक दूरी के साथ कई शैक्षणिक संस्थानों में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। राजभाषा हिंदी के समक्ष उसके कार्यान्वयन की चुनौतियां विषयक संगोष्ठी की अध्यक्षता विभागाध्यक्ष प्रो. राजें र ह ने की। उन्होंने राजभाषा हिंदी के समक्ष आने वा ी चुनौतियों के रूप में सही प्रयत्नों के अभाव को चि न करते हुए कहा कि हिंदी व्यावहारिक स्तर पर मज त भाषा बन गई है। लेकिन, इसके सम्यक विकास क्षेत्रीयता, बोलियों के स्वरूप की जटिल स्थिति, ३ द की जटिलता एवं प्रचार-प्रसार से जुड़ी हुई नाइयां इसके केंद्र में रही है। संकीर्णता और क्षे की समस्या ने हिंदी की राजभाषा को कई रू प्रभावित किया है। बाजारवाद, विज्ञापन, वैश्विक र और अनेक प्रकार की व्यवस्था से जुड़ी चुनौति ो भी उन्होंने इस संदर्भ में रेखांकित किय। डॉ. वि कुमार ने कहा कि हिंदी जनता की भाषा के रूप में भाषा बनी है।

डॉ. रेंद्र प्रसाद सुमन ने हिंदी दिवस के अवसर पर कह के हमें हिंदी-दिवस मनाने पर गहरी आपत्ति है। क क हिंदी दिवस को कतिपय समुदाय हिंदू [illegible] ही हम सांसों और जीवन से जुड़ी भाषा रही है, तो उसके बगैर हमारे अस्तित्व की कल्पना ही नहीं की जा सकती। विषय-प्रवेश के क्रम में डॉ. आनंद प्रकाश गुप्ता ने राजभाषा हिंदी के संवैधानिक प्रावधानों की विस्तृत चर्चा की। अखिलेश कुमार ने भारतवर्ष की भाषिक विविधता की चर्चा की। डॉ. उमेश कुमार शर्मा ने हिंदी दिवस पर हिंदी के संवैधानिक प्रावधानों की चर्चा की। कार्यक्रम के दौरान शोधप्रज्ञ शंकर कुमार ने कविता का पाठ किया। जबकि, शोधप्रज्ञ हरिओम कुमार, खुशबू कुमारी, पार्वती कुमारी एवं सियाराम मुखिया आदि मौजूद थे। कुंवर सिंह महाविद्यालय में हिंदी दिवस के मौके पर एक सेमिनार का आयोजन राष्ट्रीय सेवा योजना की ओर से किया गया। प्रधानाचार्य [illegible] अपना [illegible]। दुकान का नाम हिंदी में लिखेंगे। हिंदी विश्व बंधुत्व की भाषा है। यह तुलसी, रहीम व रसखान की भाषा है। का म पदाधिकारी डॉ अशोक कुमार सिंह ने कहा कि [illegible] अब वैश्विक भाषा बन चुकी है। डॉ. अमित सिन्हा ने धन्यवाद ज्ञापन किया।



हिंदी दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में विचार रखते शिक्षक।

एमआरएम कॉलेज के [illegible] विभाग में गुगल मीट के माध्यम से वेबिनार आयो किया गया। प्रधानाचार्य डॉ. अरविंद कुमार झा ने [illegible]र्तमान स्थिति पर प्रकाश डाला। साथ ही विभाग को [illegible] दिवस पर एक वार्षिक पत्रिका आरम्भ करने का [illegible]व भी दिया गया। इस दौरान हिंदी विभाग की छात्रा [illegible]मृता, सुषमा, राजनंदिनी, नीतू, सुलभा, निक्की, कुमा[illegible], कविता, अंजू आदि ने हिन्दी भाषा पर अपनी रचनात्मक अभिव्यक्ति दी। हिन्दी को यथोचित सम्मान [illegible] की बात पर जोर दिया। ऑनलाइन कार्यक्रम का संचालन हिंदी विभाग की शिक्षिका नीलम सैन ने किया। धन्यवाद ज्ञापन अंग्रेजी विभाग की शिक्षिका चित्रा [illegible] ने किया।

## शिक्षकों ने हिंदी व्याकरण के महत्व पर विस्तार से डाला प्र

महात्मा गांधी महाविद्यालय में हिंदी दिवस [illegible] मतदाता जागरुकता अभियान को लेकर प्रभा[illegible] डॉ. रामदेव चौधरी की अध्यक्षता गोष्ठी हुई। [illegible] ममता रानी अग्रवाल ने इसका संचालन कि[illegible] अवसर पर डॉ. राधे कृष्ण प्रसाद ने हिंदी वि[illegible] के महत्व को रेखांकित करते हुए हिंदी व्याकर[illegible] के विशेषताओं पर प्रकाश डाला। प्रो. शत्रुघ्न [illegible] ने मतदाता जागरुकता अभियान के महत्व तथ[illegible] उससे होने वाले अच्छे परिणामों पर चर्चा की। [illegible] ज्वाला चंद्र चौधरी ने हिंदी के वैश्विक महत्व [illegible] समझाते हुए हिंदी भाषी छात्रों को इसके क्षेत्र में [illegible] सरकारी एवं गैर सरकारी सेवा के अवसर की [illegible] की। डॉ. ममता रानी अग्रवाल ने भरतेन्दु युग से लेकर हिन्दी के सफर को विस्तार से प्रकाश डा[illegible]

**काव्य गोष्ठी का आयोजन :** हिन्दी-दिवस के उपल[illegible] में दरभंगा के युवा कवि नवीन कुमार आशा के नेतृत्व काव्य-गोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसका संचालन दरभंगा की युवा रचनाकार अनिग्धा श्रीवास्तव ने किया। मुख्य वक्ता की भूमिका साहित्यकार शशिकांत मिश्र ने निभाई। उन्होंने हिन्दी की दशा व दिशा पर अपनी बात रखते हुए कहा कि हिन्दी को उसका गौरवमय स्थान तभी मिल सकेगा जब हम अंग्रेजी के मोह से बाहर निकलेंगे । प्रीति कुमारी ने युवाओं को प्रेरित करती अपनी रचना हार क्या जीत क्या से की। इसमें शाम्भवी माहेश्वरी, अनु श्रीवास्तव, पूजा कुमारी, ऋचा कुमारी आदि ने रचनाओं से हिन्दी की दशा, दिशा पर प्रकाश डाला।

(24)

हिन्दी दिवस
14 सितम्बर, 2020

मुजफ्फरपुर, मंगलवार 15.09.2020 | प्रभात खबर | 04

## हिंदी दिवस. बाजारवाद, विज्ञापन, वैश्विक प्रसार हैं चुनौतियां

# राजभाषा हिंदी को संकीर्णता क्षेत्रीयता कर रही प्रभावित

➲ राजभाषा हिंदी के समक्ष उसके कार्यान्वयन की चुनौतियां विषय पर पीजी हिंदी विभाग में संगोष्ठी

प्रतिनिधि,दरभंगा.

लनामिवि के पीजी हिंदी-विभाग में हिंदी-दिवस पर 'राजभाषा हिंदी के समक्ष उसके कार्यान्वयन की चुनौतियां' विषय पर सोमवार को संगोष्ठी का आयोजन किया गया. कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विभागाध्यक्ष डॉ राजेंद्र साह ने राजभाषा हिंदी के समक्ष आने वाली चुनौतियों के रूप में सही प्रयत्नों के अभाव को चिह्नित किया. कहा कि हिंदी व्यावहारिक स्तर पर मजबूत भाषा बन गई है, लेकिन इसके सम्यक् विकास में क्षेत्रीयता, बोलियों के स्वरुप की जटिल स्थिति, अनुवाद की जटिलता एवं प्रचार-प्रसार से जुड़ी हुई कठिनाइयां है. संकीर्णता और क्षेत्रीयता की समस्या ने हिंदी राजभाषा को कई रुपों में प्रभावित किया है. बाजारवाद, विज्ञापन, वैश्विक प्रसार और अनेक प्रकार की व्यवस्था से जुड़ी चुनौतियों को भी डॉ साह ने रेखांकित किया.



विचार रखते डॉ सुरेंद्र प्रसाद सुमन व मौजूद विभागाध्यक्ष डॉ राजेंद्र साह, डॉ एपी गुप्ता व सहायक प्राध्यापक अखिलेश कुमार.

### जनता की भाषा के बल पर हिंदी बनी राजभाषा : डॉ विजय

डॉ विजय कुमार ने हिंदी भाषा के मुद्दे को सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक परिप्रेक्ष्य से जोड़कर उसके विकास की संभावनाओं पर विचार रखा. कहा कि हिंदी जनता की भाषा के रूप में राजभाषा बनी है. डॉ विजय ने व्यवस्था और भाषा के संबंधों का विस्तार से विश्लेषण किया.

### अपने बूते आगे बढ़ रही हिंदी : डॉ सुरेंद्र

डॉ सुरेंद्र प्रसाद सुमन ने कहा कि हिंदी दिवस को कतिपय समुदाय हिंदू दिवस की तरह मनाते हैं. कहा कि हिंदी जीवित मनुष्य की जीवित भाषा है. जब हिंदी ही हमारी सांसों और जीवन से जुड़ी भाषा रही है, तो उसके बिना अस्तित्व की कल्पना नहीं की जा सकती. हिंदी अपने बूते आगे बढ़ रही है. उन्होंने हिंदी में भाषिक ब्राह्मणवाद और मुल्लावाद को बड़ी चुनौती बताया.

### हिंदी राष्ट्रीय अस्मिता की भाषा : डॉ आनंद

डॉ आनंद प्रकाश गुप्ता ने राजभाषा हिंदी के संवैधानिक प्रावधानों की विस्तृत चर्चा की. राजभाषा हिंदी के विकास की ऐतिहासिक स्थिति पर प्रकाश डाला. हिंदी की सह-भाषा, उसकी बोलियां और उसके संवैधानिक प्रावधानों में आई चुनौतियों की चर्चा करते हुए हिंदी को राष्ट्रीय अस्मिता, एकता और अखंडता की भाषा बताया.

### आजादी की लड़ाई में हिंदी का योगदान : अखिलेश

लनामिवि के हिंदी विभाग में असिस्टेंट प्रोफेसर अखिलेश कुमार ने भारतवर्ष की भाषिक विविधता की चर्चा करते हुए हिंदी को उसके केंद्र में प्रतिष्ठित बताया. कहा कि आजादी की लड़ाई में हिंदी का खासा योगदान रहा है. डॉ उमेश कुमार शर्मा ने हिंदी के संवैधानिक प्रावधानों की चर्चा करते हुए उसके वैश्विक स्वरुप की ओर ध्यान दिलाया. शोधप्रज्ञ शंकर कुमार ने कविता पाठ किया. शोधप्रज्ञ हरिओम कुमार, खुशबू कुमारी, पार्वती कुमारी एवं सियाराम मुखिया ने उद्‌गार व्यक्त किए. कार्यक्रम में छात्र-छात्रा एवं शोधप्रज्ञों की उपस्थिति रही.

समिति, पटना
20 / 2020
परीक्षा, 2020 के अंक–पत्रक,
ोना महामारी के मद्देनजर ग्रेस
छात्रा का), वार्षिक माध्यमिक
2019 का पंजीयन कार्ड एवं
ा शिक्षा पदाधिकारी कार्यालय
वश्यक सूचना

हिन्दुस्तान, 15.09.2020 पृ-4

# हिन्दी को प्रभावित करती है संकीर्णता

दरभंगा | निज प्रतिनिधि

लनामि विवि के विवि हिंदी विभाग में सोमवार को हिंदी दिवस पर सामाजिक दूरी के साथ संगोष्ठी का आयोजन किया गया। 'राजभाषा हिंदी के समक्ष उसके कार्यान्वयन की चुनौतियां' विषयक संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. राजेंद्र साह ने सर्वप्रथम हिंदी दिवस की शुभकामनाएं दीं तथा राजभाषा हिंदी के समक्ष आने वाली चुनौतियों के संबंध में चर्चा की।

उन्होंने कहा कि हिंदी व्यावहारिक स्तर पर मजबूत भाषा बन गई है, लेकिन इसके सम्यक विकास में क्षेत्रीयता, बोलियों के स्वरूप की जटिल स्थिति, अनुवाद की जटिलता एवं प्रचार-प्रसार से जुड़ी हुई कठिनाइयां-इसकी चुनौतियों के केंद्र में रही हैं। संकीर्णता और क्षेत्रीयता की समस्या ने हिंदी की राजभाषा को कई रूपों में प्रभावित किया है। बाजारवाद, विज्ञापन, वैश्विक प्रसार और अनेक प्रकार की व्यवस्था से जुड़ी चुनौतियों को भी उन्होंने इस संदर्भ में प्रश्नांकित किया। विभागीय प्राध्यापकों में डॉ. विजय कुमार ने हिंदी भाषा के मुद्दे को सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक परिप्रेक्ष्य से जोड़कर उसके विकास की संभावनाओं पर गहरा विमर्श किया। डॉ. सुरेंद्र प्रसाद सुमन ने कहा कि हमें हिंदी दिवस मनाने पर गहरी आपत्ति है, क्योंकि हिंदी दिवस को कतिपय समुदाय हिंदू दिवस की तरह मनाते हैं। उन्होंने जोर देकर कहा कि हिंदी जीवित मनुष्य की जीवित भाषा है। कार्यक्रम का संचालन एवं विषय प्रवेश डॉ. आनंद प्रकाश गुप्ता ने किया। अखिलेश कुमार व डॉ. उमेश कुमार शर्मा ने भी विचार रखे। कार्यक्रम में शोधप्रज्ञ शंकर कुमार, हरिओम कुमार, खुशबू कुमारी, पार्वती कुमारी एवं सियाराम मुखिया भी थे।

## हिन्दी ही है भारतीयता की पहचान : डॉ. निहार

केवटी। पचाढ़ी बाबा साहेब राम संस्कृत महाविद्यालय में सोमवार को हिन्दी दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन ऑनलाइन के माध्यम से प्रधानाचार्य डॉ. दिनेश झा की अध्यक्षता में हुआ। डॉ. निहार रंजन सिन्हा ने कहा कि हिन्दी भारतीयता की पहचान है। इसके निरंतर उत्थान और संवर्धन में ही देशवासियों का सर्वविध कल्याण सन्निहित है। कार्यक्रम को प्रो. अभय नाथ ठाकुर, डॉ. विनय कुमार चौधरी, डॉ. त्रिलोक झा, डॉ. राजकिशोर मिश्र, डॉ. पुष्पा कुमारी, डॉ. विकास, डॉ. प्रबोध नारायण ठाकुरने संबोधित किया।

## एमआरएम कॉलेज में हिन्दी दिवस पर वेबिनार

दरभंगा। हिन्दी दिवस पर सोमवार को एमआरएम कॉलेज के हिन्दी विभाग द्वारा गूगल मीट के माध्यम से वेबिनार आयोजित किया गया। प्रधानाचार्य डॉ. अरविंद कुमार झा ने हिन्दी की वर्तमान स्थिति पर प्रकाश डाला। साथ ही विभाग को हिन्दी की एक वार्षिक पत्रिका आरम्भ करने का सुझाव दिया। हिन्दी विभाग की छात्रा अमृता, सुषमा, राजनंदिनी, नीतू, सुलभा, निक्की, कुमारी नेहा, कविता, अंजू आदि ने हिन्दी भाषा पर अपनी रचनात्मक अभिव्यक्ति दी तथा हिन्दी को यथोचित सम्मान देने की बात पर जोर दिया।

आज दिनांक 23.09.2020 को राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर की जयंती के उपलक्ष्य में 'राष्ट्रकवि दिनकर की जनचेतना' विषय पर विभागाध्यक्ष डॉ० राजेन्द्र साह की अध्यक्षता में विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग में संगोष्ठी का आयोजित हो रही है:

| क्रम सं. | नाम | हस्ताक्षर |
|---|---|---|
| 1 | चन्द्रभानु प्रसाद सिंह | चन्द्रभानु 23.9.20 |
| 2 | उमेश कुमार शर्मा | |
| 3 | [illegible] कुमार | [illegible] कुमार 23.09.20 |
| 4 | सुरेन्द्र प्रसाद सुमन | [illegible] 23.9.20 |
| 5 | [illegible] कुमार गौरव | [illegible] |
| 6 | अखिलेश कुमार | अखिलेश कुमार |
| 7 | धर्मेन्द्र दास | धर्मेन्द्र दास |
| 8 | कृष्णा अनुराग | कृष्णा अनुराग |
| 9 | विकास कुमार भारती | विकास |
| 10 | सौरव कुमार झा | सौरव |
| 11 | विकास कुमार महतो | विकास कु० |
| 12 | शिवानी कुमारी | शिवानी कुमारी |
| 13 | फूल लक्ष्मी कुमारी | फूल लक्ष्मी कुमारी |
| 14 | वीणा कुमारी | वीणा कुमारी |
| 15 | सुमंत कुमार | सुमंत कुमार |
| 16 | Komal Kumari | कोमल कुमारी |
| 17 | चन्दन राय | Chandan Ray |
| 18 | प्रमोद यादव | प्रमोद यादव |
| 19 | संतोष कुमार | Santosh Kumar |
| 20 | सराधन राम | सराधन राम |
| 21 | [illegible] | [illegible] |

(21)

# दिनांक- 23.09.2020 को 'दिनकर-जयंती' पर आयोजित संगोष्ठी की कार्यवाही

आज दिनांक 23/9/2020 को विश्वविद्यालय हिंदी-विभाग के तत्त्वावधान में दिनकर-जयंती का कार्यक्रम सामाजिक दूरी को ध्यान में रखते हुए मनाया गया। 'राष्ट्रकवि दिनकर की जनचेतना' विषयक आज की संगोष्ठी के कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विभागाध्यक्ष डॉ. राजेंद्र साह ने दिनकर की रचनाओं में निहित जनचेतना की स्थिति को केंद्रीय माना और बताया कि चेतना जागृति का स्वरूप है। उन्होंने बताया कि दिनकर जनता की आवाज, उनकी जीवन-दिशा एवं जीवन-स्वरूप को अभिव्यक्ति के स्तर पर अपनाकर छायावादोत्तर दौर में राष्ट्रीय चेतना के साथ अपनी कविता में प्रकट होते हैं। दिनकर की प्रसिद्धि के केंद्र में उनकी राष्ट्रीय चेतना-प्रधान कविताओं को मानते हुए उन्होंने कहा कि दिनकर का विशेष गुण युग-धर्म के अनुसार अपनी सृजनात्मकता को लगातार परिष्कृत करने में है। दिनकर को केवल राष्ट्रवादी ही नहीं, बल्कि मानवतावादी कवि के रूप मे भी उन्होंने श्रेष्ठ बताया और कहा कि उनकी कविताओं में युग-धर्म और युग-चेतना की जीवंत स्थिति देखी जा सकती है। उनकी कविता मानव-मूल्यों का संवर्धन करने वाली कविता है।

कार्यक्रम में पूर्व हिंदी विभागाध्यक्ष एवं दिनकर सम्मान से सम्मानित प्रो. चंद्रभानु प्रसाद सिंह ने दिनकर पर कार्यक्रम करवाने को सर्वप्रथम आवश्यक कदम बताया और कहा कि दिनकर राष्ट्रीय स्तर के महत्त्वपूर्ण कवि होने के अलावा विश्वविद्यालय के क्षेत्राधिकार के भी कवि हैं, जो सतह से उठकर राष्ट्रीय क्षितिज पर अपनी रचनात्मक उत्कृष्टता से राष्ट्रकवि के रूप में उपस्थिति दर्ज कराते हैं। डॉ. सिंह ने दिनकर को कविता का हिमालय कहा। साथ ही बताया कि दिनकर में प्रेम और संघर्ष का युगपद रचनात्मकता की कसौटी पर विराट सृजनात्मक चेष्टा उत्पन्न करता है। उन्होंने दिनकर के राष्ट्रवाद को गहराई से विश्लेषित करते हुए बताया कि आजादी के दौरान जो दिनकर राष्ट्रीयता प्रधान कविता लिखकर अपनी राष्ट्रीयता की छवि बनाते हैं, वही आजादी के बाद अंध राष्ट्रवाद की आलोचना भी करते हैं। डॉ. सिंह ने भारत की सामासिक संस्कृति की महत्त्वपूर्ण अभिव्यक्ति करने में दिनकर की कृति 'संस्कृति के चार अध्याय' की चर्चा की और बताया कि दिनकर अपनी रचनात्मकता की बहुआयामिता के कारण आज ज्यादा प्रासंगिक हो रहे हैं। कार्यक्रम में बोलते हुए प्रो. विजय कुमार ने बताया कि दिनकर से विचारों का मिजाज बहुत-कुछ मिलता-जुलता प्रतीत होता है। इस समय जो चीन के साथ संघर्ष का माहौल है, उसमें दिनकर जयंती की प्रासंगिकता काफी बढ़ जाती है। उन्होंने परशुराम की प्रतीक्षा में दिनकर की राष्ट्रीय चेतना की व्याप्ति पर भी

प्रकाश डाला। साथ ही दिनकर की राजनीतिक सोच, उनकी रचनाओं में उपस्थित बेचैनी, जातीय गौरव का बोध जैसे महत्त्वपूर्ण तत्वों पर ध्यान दिलाते हुए दिनकर जी को याद किया।

डॉ. सुरेंद्र प्रसाद सुमन ने अपने व्याख्यान में कहा कि आज दो महान योद्धा साहित्यकारों का जन्मदिन है- एक राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर का और दूसरे मार्क्सवादी आलोचक मैनेजर पांडे जी का। दिनकर की राष्ट्रीय चेतना को उन्होंने जनचेतना से ओतप्रोत बताया और कहा दिनकर की ऐसी सैकड़ों पंक्तियाँ हैं, जिन्हें लोग समर-गान की भांति गाते हैं। राष्ट्रकवि होना अपनी जगह है, लेकिन दिनकर की पंक्तियाँ, दिनकर की कविताएँ, जनता को जोड़ने वाली कविता हैं और उनमें स्थित सुघरता बेहद खास है।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. आनंद प्रकाश गुप्ता ने किया। उन्होंने विषय-प्रवेश करते हुए दिनकर को राष्ट्रीय चेतना को जगाने वाले कवि एवं स्वाधीनता आंदोलन को दिशा देने वाले कवि के रूप में याद किया। कार्यक्रम में धन्यवाद ज्ञापन श्री अखिलेश कुमार ने किया। अपने वक्तव्य के दौरान उन्होंने दिनकर को राग और आग का कवि कहा। साथ ही बताया कि दिनकर की कविता में प्रेम और विरोध का सामंजस्य भी मिलता है।

इस अवसर पर शोधप्रज्ञ शंकर कुमार ने दिनकर की कविता में निहित व्यवस्था की सही दिशा से जुड़ी बातों को याद किया। कार्यक्रम में एम.आर.एम. कॉलेज की प्राध्यापिका नीलम सेन एवं एम.के. कॉलेज के प्राध्यापक डॉ.आलोक प्रभात के अलावा छात्र-छात्राओं एवं शोधार्थियों की सार्थक उपस्थिति रही।

(1)

मुजफ्फरपुर, गुरुवार
24.09.2020 | प्रभात खबर | 04

### कार्यक्रम. जयंती पर पीजी हिंदी विभाग में राष्ट्रकवि दिनकर की जनचेतना विषय पर संगोष्ठी

# मानवतावादी कवि के रूप में प्रसिद्ध हैं दिनकर : डॉ साह

**प्रतिनिधि,दरभंगा**

लनामिवि के पीजी हिंदी विभाग में बुधवार को 'राष्ट्रकवि दिनकर की जनचेतना' विषय पर संगोष्ठी आयोजित की गयी. दिनकर-जयंती पर आयोजित इस कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विभागाध्यक्ष डॉ राजेंद्र साह ने दिनकर की रचनाओं में निहित जनचेतना की स्थिति को केंद्रीय माना. कहा कि चेतना जागृति का स्वरूप है. जनता की आवाज, उनकी जीवन-दिशा एवं जीवन-स्वरूप को अभिव्यक्ति के स्तर पर अपनाकर दिनकर छायावादोत्तर दौर में राष्ट्रीय चेतना के साथ अपनी कविता में प्रकट होते हैं. दिनकर की प्रसिद्धि के केंद्र में उनकी राष्ट्रीय चेतना-प्रधान कविताएं हैं. दिनकर का विशेष गुण युग-धर्म के अनुसार अपनी सृजनात्मकता को लगातार परिष्कृत करने में है. दिनकर को केवल राष्ट्रवादी ही नहीं, बल्कि मानवतावादी कवि के रूप में भी डॉ साह ने श्रेष्ठ बताया.

**दिनकर की रचनाओं में युगधर्म व युगचेतना की जीवंत स्थिति**

कहा कि उनकी कविताओं में युग-धर्म और युग-चेतना की जीवंत स्थिति देखी जा सकती है. उनकी कविता मानव-मूल्यों का संवर्धन करने वाली है.

डॉ सुरेंद्र प्रसाद सुमन ने दिनकर की राष्ट्रीय चेतना को जनचेतना से ओतप्रोत बताया. कहा कि दिनकर की ऐसी सैकड़ों पंक्तियां हैं, जिन्हें लोग समर-गान की भांति गाते हैं. राष्ट्रकवि होना अपनी जगह है, लेकिन उनकी कविताएं, जनता को जोड़ने वाली है. संचालन व विषय प्रवेश कराते हुए डॉ आनंद प्रकाश गुप्ता ने दिनकर को राष्ट्रीय चेतना को जगाने वाले कवि एवं स्वाधीनता आंदोलन को दिशा देने वाले कवि के रूप में याद किया. धन्यवाद ज्ञापित करते हुए



कार्यक्रम में मौजूद विभागाध्यक्ष व अन्य.

**आज दिनकर जयंती अधिक प्रासंगिक : प्रो. विजय**

प्रो. विजय कुमार ने कहा कि इस समय जो चीन के साथ संघर्ष का माहौल है, उसमें दिनकर जयंती की प्रासंगिकता काफी बढ़ जाती है. परशुराम की प्रतीक्षा में दिनकर की राष्ट्रीय चेतना की व्याप्ति पर प्रो. कुमार ने विस्तार से प्रकाश डाला. साथ ही दिनकर की राजनीतिक सोच, उनकी रचनाओं में उपस्थित बेचैनी, जातीय गौरव का बोध आदि तत्वों की ओर ध्यान खींचा.

असिस्टेंट प्रोफेसर अखिलेश कुमार ने कहा कि दिनकर को राग और आग का कवि कहा. दिनकर की कविता में प्रेम और विरोध का सामंजस्य भी मिलता है. शोधप्रज्ञ शंकर कुमार ने दिनकर की कविता में निहित व्यवस्था की दिशा को याद किया. पूर्व विभागाध्यक्ष एवं दिनकर सम्मान से सम्मानित प्रो. चंद्रभानु प्रसाद सिंह ने कहा कि दिनकर राष्ट्रीय स्तर के महत्वपूर्ण कवि होने के अलावा विश्वविद्यालय के क्षेत्राधिकार के भी कवि हैं. सतह से उठकर राष्ट्रीय क्षितिज पर अपनी रचनात्मक उत्कृष्टता से राष्ट्रकवि के रूप में उन्होंने उपस्थिति दर्ज करायी है. डॉ सिंह ने दिनकर को कविता का हिमालय बताया. कहा कि दिनकर में प्रेम और संघर्ष का युगपद रचनात्मकता की कसौटी पर विराट सृजनात्मक चेष्टा उत्पन्न करता है. बताया कि आजादी की लड़ाई के दौरान जो दिनकर राष्ट्रीयता प्रधान कविता लिखकर अपनी राष्ट्रीयता की छवि बनाते हैं, वही आजादी के बाद अंध राष्ट्रवाद की आलोचना भी करते हैं. डॉ सिंह ने भारत की सामासिक संस्कृति की महत्वपूर्ण अभिव्यक्ति 'संस्कृति के चार अध्याय' की चर्चा की. कहा कि दिनकर अपनी रचनात्मकता की बहुआयामिता के कारण आज ज्यादा प्रासंगिक हो रहे हैं.

**Ph.D. Award**
Shruti Jaiswal, W/o
Dr. Sushant Kumar,

## मिल्लत कॉलेज में

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर हिंदी विभाग की ओर से आयोजित की गई राष्ट्रकवि दिनकर की जयंती

# दिनकर ने बताया चेतना जागृति का है स्वरूप

हिन्दुस्तान 24/9/2020

## कार्यक्रम

दरभंगा | निज प्रतिनिधि

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के तत्वावधान में बुधवार को दिनकर जयंती का आयोजन किया गया। 'राष्ट्रकवि दिनकर की जनचेतना' विषयक संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए विभागाध्यक्ष डॉ. राजेंद्र साह ने दिनकर की रचनाओं में निहित जनचेतना की स्थिति को केंद्रीय माना और बताया कि चेतना जागृति का स्वरूप है।

उन्होंने कहा कि दिनकर जनता की आवाज, उनकी जीवन दिशा एवं जीवन स्वरूप को अभिव्यक्ति के स्तर पर अपनाकर छायावादोत्तर दौर में राष्ट्रीय चेतना के साथ अपनी कविता में प्रकट होते हैं। दिनकर की प्रसिद्धि के केंद्र में उनकी राष्ट्रीय चेतना प्रधान कविताओं को मानते हुए उन्होंने कहा कि दिनकर का विशेष गुण युग-धर्म के अनुसार अपनी सृजनात्मकता को लगातार परिष्कृत करने में है। दिनकर को केवल राष्ट्रवादी ही नहीं, बल्कि मानवतावादी कवि के रूप में भी उन्होंने श्रेष्ठ बताया और कहा कि उनकी कविताओं में युग-धर्म और युग-चेतना की जीवंत स्थिति देखी जा सकती है। उनकी कविता मानव मूल्यों का संवर्धन करने वाली कविता है।

### रखे विचार

- राष्ट्रकवि दिनकर की जनचेतना विषय पर रखे गये विचार
- कहा, सिर्फ राष्ट्रवादी कवि ही नहीं मानववादी भी थे दिनकर

कार्यक्रम में पूर्व हिंदी विभागाध्यक्ष एवं दिनकर सम्मान से सम्मानित प्रो. चंद्रभानु प्रसाद सिंह ने दिनकर पर कार्यक्रम करवाने को सर्वप्रथम आवश्यक कदम बताया और कहा कि दिनकर राष्ट्रीय स्तर के महत्वपूर्ण कवि होने के अलावा विश्वविद्यालय के क्षेत्राधिकार के भी कवि हैं, जो सतह से उठकर राष्ट्रीय क्षितिज पर अपनी रचनात्मक उत्कृष्टता से राष्ट्रकवि के रूप में उपस्थिति दर्ज कराते हैं। डॉ. सिंह ने दिनकर को कविता का हिमालय कहा। साथ ही बताया कि दिनकर में प्रेम और संघर्ष का युगपद रचनात्मकता की कसौटी पर विराट सृजनात्मक चेष्टा उत्पन्न करता है। उन्होंने दिनकर के राष्ट्रवाद को गहराई से विश्लेषित करते हुए बताया कि आजादी के दौरान जो दिनकर राष्ट्रीयता प्रधान कविता लिखकर अपनी राष्ट्रीयता की छवि बनाते हैं, वही आजादी के बाद अंध राष्ट्रवाद की आलोचना भी करते हैं। डॉ. सिंह ने भारत की सामासिक संस्कृति की महत्वपूर्ण अभिव्यक्ति करने में दिनकर की कृति 'संस्कृति के चार अध्याय' की चर्चा की और बताया कि दिनकर अपनी रचनात्मकता की बहुआयामिता के कारण आज ज्यादा प्रासंगिक हो रहे हैं।



लनामि विवि के विवि हिंदी विभाग में बुधवार को संगोष्ठी को संबोधित करते दिनकर सम्मान से सम्मानित पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. चंद्रभानु प्रसाद सिंह।

प्रो. विजय कुमार ने कहा कि दिनकर से विचारों का मिजाज बहुत कुछ मिलता-जुलता प्रतीत होता है। इस समय जो चीन के साथ संघर्ष का माहौल है, उसमें दिनकर जयंती की प्रासंगिकता काफी बढ़ जाती है। उन्होंने परशुराम की प्रतीक्षा में दिनकर की राष्ट्रीय चेतना की व्याप्ति पर भी प्रकाश डाला। साथ ही दिनकर की राजनीतिक सोच, उनकी रचनाओं में उपस्थित बेचैनी, जातीय गौरव का बोध जैसे महत्वपूर्ण तत्वों पर ध्यान दिलाते हुए दिनकर को याद किया। डॉ. सुरेंद्र प्रसाद सुमन ने अपने व्याख्यान में कहा कि आज दो महान योद्धा साहित्यकारों का जन्मदिन है- एक राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर का और दूसरे मार्क्सवादी आलोचक मैनेजर पांडे जी का। दिनकर की राष्ट्रीय चेतना को उन्होंने जनचेतना से ओतप्रोत बताया और कहा दिनकर की ऐसी सैकड़ों पंक्तियां हैं, जिन्हें लोग समर-गान की भांति गाते हैं। राष्ट्रकवि होना अपनी जगह है, लेकिन दिनकर की पंक्तियां, दिनकर की कविताएं जनता को जोड़ने वाली हैं।

## दिनकर जयंती पर संगोष्ठी आयोजित

बहेड़ी। बिलट महथा आदर्श महाविद्यालय, बहेड़ी के हिंदी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. उमेश कुमार की अध्यक्षता में बुधवार को राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर की 112वीं जयंती मनाई गई। इस अवसर पर 'दिनकर का समाज और राष्ट्र धर्म' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें कॉलेज के शिक्षक व छात्र-छात्राओं के अलावा झारखंड, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ एवं पटना के शिक्षक एवं शोधार्थियों ने भी ऑनलाइन अपने विचार रखे। दूसरी ओर मानवाधिकार संरक्षण प्रतिष्ठान के जिलाध्यक्ष प्रदीप कुमार चौधरी की अध्यक्षता में पघारी गांव में दिनकर की जयंती मनाई गई। (ए.सं.)

## दिनकर के रश्मिरथी में मानवता का अमर संदेश

सरायरंजन (समस्तीपुर)। केएसआर कॉलेज में बुधवार को राष्ट्रकवि दिनकर की जयंती धूमधाम से मनायी गयी। इसमें वक्ताओं ने कहा कि राष्ट्रकवि दिनकर की कालजयी रचना रश्मिरथी जीवन में मानवता का अमर संदेश देती है, जिससे इंसान भगवान बन सकता है। राष्ट्रकवि दिनकर वीर रस के वजह से कभी होने के साथ भक्त कवि भी थे। प्रो. जनार्दन चौधरी ने राष्ट्रकवि दिनकर को युगांतर कवि बतलाया। डॉ. विजय कुमार झा, डॉ. गगनदेव चौधरी, प्रो. मनोज कुमार झा, प्रो. हरेकृष्ण चौधरी, प्रो. शेखर प्रसाद चौधरी, डॉ. उषा कुमारी आदि ने दिनकर जयंती समारोह को संबोधित किया। (नि.सं.)

24/9/2020 दैनिक जागरण

द्वारा चेतना के साथ अपनी कविता में प्रकट होते हैं। दिनकर की प्रसिद्धि के केंद्र में उनकी राष्ट्रीय चेतना प्रधान कविताओं को मानते हुए उन्होंने कहा कि दिनकर का विशेष गुण युग-धर्म के अनुसार अपनी सृजनात्मकता को लगातार परिष्कृत करने में है। दिनकर को केवल राष्ट्रवादी ही नहीं, बल्कि मानवतावादी कवि के रूप में भी उन्होंने श्रेष्ठ बताया और कहा कि उनकी

उठकर राष्ट्रीय क्षितिज पर अपनी रचनात्मक उत्कृष्टता से राष्ट्रकवि के रूप में उपस्थिति दर्ज कराते हैं। डॉ. सिंह ने दिनकर को कविता का हिमालय कहा। साथ ही बताया कि दिनकर में प्रेम और संघर्ष का युगपद रचनात्मकता की कसौटी पर विराट सृजनात्मक चेष्टा उत्पन्न करता है। उन्होंने दिनकर के राष्ट्रवाद को गहराई से विश्लेषित करते हुए बताया कि आजादी के दौरान जो

दिनकर राष्ट्रीयता प्रधान कविता लिखकर अपनी राष्ट्रीयता की छवि बनाते हैं, वही आजादी के बाद अंध राष्ट्रवाद की आलोचना भी करते हैं। डॉ. सिंह ने भारत की सामासिक संस्कृति की महत्वपूर्ण अभिव्यक्ति करने में दिनकर की कृति 'संस्कृति के चार अध्याय' की चर्चा की और बताया कि दिनकर अपनी रचनात्मकता की

बहुआयामिता के कारण आज ज्यादा प्रासंगिक हो रहे हैं।

प्रो. विजय कुमार ने कहा कि दिनकर से विचारों का मिजाज बहुत कुछ मिलता-जुलता प्रतीत होता है। इस समय जो चीन के साथ संघर्ष का माहौल है, उसमें दिनकर जयंती की प्रासंगिकता काफी बढ़ जाती है। उन्होंने परशुराम की प्रतीक्षा में दिनकर की

राष्ट्रीय चेतना की व्याप्ति पर भी प्रकाश डाला। साथ ही दिनकर की राजनीतिक सोच, उनकी रचनाओं में उपस्थित बेचैनी, जातीय गौरव का बोध जैसे महत्वपूर्ण तत्वों पर ध्यान दिलाते हुए दिनकर को याद किया। डॉ. सुरेंद्र प्रसाद सुमन ने अपने व्याख्यान में कहा कि आज दो महान योद्धा साहित्यकारों का जन्मदिन है- एक राष्ट्रकवि रामधारी

सिंह दिनकर का और दूसरे मार्क्सवादी आलोचक मैनेजर पांडे जी का। दिनकर की राष्ट्रीय चेतना को उन्होंने जनचेतना से ओतप्रोत बताया और कहा दिनकर की ऐसी सैकड़ों पंक्तियां हैं, जिन्हें लोग समर-गान की भांति गाते हैं। राष्ट्रकवि होना अपनी जगह है, लेकिन दिनकर की पंक्तियां, दिनकर की कविताएं जनता को जोड़ने वाली हैं।

24/9/2020 दै० जागरण

www.jagran.com



# राष्ट्रकवि दिनकर कविताओं के हिमालय : चंद्रभानु

## ललामिवि के हिंदी विभाग में राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर की मनाई गई जयंती

जासं, दरभंगा : राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर की जयंती बुधवार को ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में मनाई गई। इस दौरान राष्ट्रकवि दिनकर की जनचेतना विषय पर संगोष्ठी की गई। इसकी अध्यक्षता हिंदी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. राजेंद्र साह ने की। हिंदी विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष, दिनकर सम्मान से सम्मानित प्रो. चंद्रभानु प्रसाद सिंह ने कहा कि राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर कविताओं के हिमालय हैं। राष्ट्रीय स्तर के महत्वपूर्ण कवि होने के अलावा विश्वविद्यालय के क्षेत्राधिकार के भी कवि हैं, जो सतह से उठकर राष्ट्रीय क्षितिज पर अपनी रचनात्मक उत्कृष्टता से राष्ट्रकवि के रूप में उपस्थिति दर्ज कराते हैं। कहा कि दिनकर में प्रेम और संघर्ष का युगपद रचनात्मकता की कसौटी

ललामिवि के हिंदी विभाग में दिनकर जयंती पर बोलते अतिथि

दिनकर जयंती पर कार्यक्रम में मौजूद छात्र-छात्राएं • जागरण

पर विराट सृजनात्मक चेष्टा उत्पन्न करता है। आजादी के दौरान दिनकर राष्ट्रीयता प्रधान कविता लिखकर अपनी राष्ट्रीयता की छवि बनाई। वहीं आजादी के बाद अंध राष्ट्रवाद की आलोचना भी की। डॉ. सिंह ने कहा कि दिनकर अपनी रचनात्मकता की बहुआयामिता के कारण आज भी प्रासंगिक हैं। डॉ. राजेंद्र साह ने कहा कि दिनकर अपनी कविताओं के माध्यम से जनता की आवाज बने। दिनकर को केवल राष्ट्रवादी ही नहीं, बल्कि मानवतावादी कवि के रूप में भी जाना जाता है। इनकी कविताओं में युग-धर्म और युग-चेतना की जीवंत स्थिति देखी जा सकती है। प्रो. विजय कुमार ने दिनकर जयंती पर कहा कि इस समय जो चीन के साथ संघर्ष का माहौल है, इसमें दिनकर की प्रासंगिकता बढ़ जाती है। डॉ. सुरेंद्र प्रसाद सुमन ने कहा कि आज दो महान योद्धा साहित्यकारों की जयंती है। राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर के साथ मार्क्सवादी आलोचक मैनेजर पांडेय की भी जयंती आज के दिन ही मनाई जाती है। कहा कि दिनकर की ऐसी सैकड़ों पंक्तियां हैं, जिन्हें लोग समरगान की तरह गाते हैं। कार्यक्रम में डॉ. आनंद प्रकाश गुप्ता, अखिलेश कुमार समेत अन्य उपस्थित थे।

पंसस की बैठक में

# "राष्ट्रकवि दिनकर राष्ट्रवादी ही नहीं मानवतावादी भी थे"

■ दिनकर की जनचेतना' विषयक आज की संगोष्ठी आयोजित

दरभंगा/संवाददाता। बुधवार को विश्वविद्यालय हिंदी-विभाग के तत्त्वावधान में दिनकर-जयंती का कार्यक्रम सामाजिक दूरी को ध्यान में रखते हुए मनाया गयो 'राष्ट्रकवि दिनकर की जनचेतना' विषयक आज की संगोष्ठी के कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विभागाध्यक्ष डॉ. राजेंद्र साह ने दिनकर की रचनाओं में निहित जनचेतना की स्थिति को केंद्रीय भाना और बताया कि चेतना जागृति का स्वरूप है उन्होंने बताया कि दिनकर जनता की आवाज, उनकी जीवन-दिशा एवं जीवन-स्वरूप को अभिव्यक्ति के स्तर पर अपनाकर छायावादोत्तर दौर में राष्ट्रीय चेतना के साथ अपनी कविता में प्रकट होते हैं दिनकर की प्रसिद्धि के केंद्र में उनकी राष्ट्रीय चेतना-प्रधान कविताओं को मानते हुए उन्होंने कहा कि दिनकर का विशेष गुण युग-धर्म के अनुसार अपनी सृजनात्मकता को लगातार परिष्कृत करने में है दिनकर को केवल राष्ट्रवादी ही नहीं, बल्कि मानवतावादी कवि के रूप मे भी उन्होंने श्रेष्ठ बताया और कहा कि उनकी कविताओं में युग-धर्म और युग-चेतना की जीवंत स्थिति देखी जा सकती है उनकी कविता मानव-मूल्यों का संवर्धन करने वाली कविता है कार्यक्रम में पूर्व हिंदी विभागाध्यक्ष एवं दिनकर सम्मान से सम्मानित प्रो. चंद्रभानु प्रसाद सिंह ने दिनकर पर कार्यक्रम करवाने को सर्वप्रथम आवश्यक कदम बताया और कहा कि दिनकर राष्ट्रीय स्तर के महत्त्वपूर्ण कवि होने के अलावा विश्वविद्यालय के क्षेत्राधिकार के भी कवि हैं, जो सतह से उठकर राष्ट्रीय क्षितिज पर अपनी रचनात्मक उत्कृष्टता से राष्ट्रकवि के रूप में उपस्थिति दर्ज कराते हैं डॉ. सिंह ने दिनकर को कविता का हिमालय कहो साथ ही बताया कि दिनकर में प्रेम और संघर्ष का युगपद रचनात्मकता की कसौटी पर विराट सृजनात्मक चेष्टा उत्पन्न करता है उन्होंने दिनकर के राष्ट्रवाद को गहराई से विश्लेषित करते हुए बताया कि आजादी के दौरान जो दिनकर राष्ट्रीयता प्रधान कविता लिखकर अपनी राष्ट्रीयता की छवि बनाते हैं, वही आजादी के बाद अंध राष्ट्रवाद की आलोचना भी करते हैं डॉ. सिंह ने भारत की सामासिक संस्कृति की महत्त्वपूर्ण अभिव्यक्ति करने में दिनकर की कृति 'संस्कृति के चार अध्याय' की चर्चा की और बताया कि दिनकर अपनी रचनात्मकता की बहुआयामिता के कारण आज ज्यादा प्रासंगिक हो रहे हैं। कार्यक्रम में बोलते हुए प्रो. विजय कुमार ने बताया कि दिनकर से विचारों का मिजाज बहुत- कुछ मिलता-जुलता प्रतीत होता है।


प्रभात ख

मुजफ्फरपुर, गुरुवार

3.12.2020


फणीश्वरनाथ रेणु पर पीजी हिं
शोध पत्रिका मैत्रेयी आलोक
विशेषांक : दरभंगा. लनामिवि
विभागीय परिषद् की बैठक विभाग
की अध्यक्षता में हुई. इसमें डॉ
ह, डॉ विजय कुमार, डॉ सुरेंद्र
नन्द प्रकाश गुप्ता, डॉ उमेश
खिलेश कुमार, डॉ उमेश कुमार
भिषेक कुमार सिन्हा आदि शामि
विभाग द्वारा प्रकाशित की
'मैत्रेयी आलोक' का फर्म
शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में

# विश्वविद्यालय-हिन्दी-विभाग

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय

कामेश्वरनगर, दरभंगा-846008


पत्रांक: दिनांक ..............................

आज दिनांक-10/01/2021 को विश्वविद्यालय हिन्दी-विभाग में 'विश्व हिन्दी दिवस' मनाया गया, जिसकी अध्यक्षता पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ० चन्द्रभानु प्रसाद सिंह ने की। इस अवसर पर मुख्य अतिथि तथा वक्ता के रूप में पूर्व संकायाध्यक्ष डॉ० प्रभाकर पाठक उपस्थित थे। इस अवसर पर उपस्थिति निम्नवत् है:-

1. [illegible]
2. [illegible]
3. [illegible]
4. [illegible]
5. उमेश कुमार शर्मा
6. सरोजनी गौतम
7. [illegible] कुमार सिन्हा
8. धर्मेन्द्र दास
9. [illegible] पासवान
10. डॉ. [illegible] राम
11. ओम प्रकाश 'निराला'
12. अशोक कुमार महतो
13. पंकज कुमार
14. [illegible] कु० भारती
15. दीपक कुमार
16. हितेन्द्र कुमार
17. गौरी शंकर यादव
18. रणधीर कुमार
19. विपुल विनय
20. विकर्तन
21. लक्ष्मण कुमार यादव
22. ज्योति कुमारी
23. प्रिया कुमारी
24. दुर्गानन्द ठाकुर
25. मनोज कुमार यादव
26. प्रियंका कुमारी
27. अंशु कुमारी
28. सूर्य नारायण
29. डौली कुमार
30. सीमा कुमारी
31. राखी कुमारी
32. तारा कुमारी
33. कृष्णा अनुराग

34 बबिता कुमारी

35 आरती कुमारी

36 शिवानी कुमारी

37 गीता कुमारी

38. सियाराम मुखिया

39. अभिनव चौधरी

विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में आयोजित किया गया "विश्व हिन्दी दिवस" पर कार्यक्रम

# वैश्विक फलक पर हिन्दी विश्व की सबसे बड़ी भाषा

जासं, दरभंगा : हिंदी को अपनी विकास-यात्रा में काफी संघर्ष करना पड़ा है। इसे आजाद भारत में भी सखी भाषा का दर्जा दिया गया। उस दौर के सत्तासीनों ने हिंदी की समृद्धि का मार्ग अवरूद्ध किया है। वाबजूद इसके हिंदी टक्कर लेती हुई आगे बढ़ती रही है। हिन्दी का वैश्विक परिदृश्य अत्यंत समृद्ध और सुखद है। वैश्विक फलक पर इसकी समृद्धि का कारण है- उन्नत सृजनशीलता, बोलने वालों की अकूत संख्या तथा अपार शब्द-संपदा है। उक्त बातें ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग द्वार आयोजित विश्व हिंदी दिवस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि रूप में पूर्व संकायाध्यक्ष डॉ. प्रभाकर पाठक ने कहीं। कहा कि बोलने वालों की दृष्टि से हिन्दी विश्व की सबसे बड़ी भाषा है। हिन्दी के पास अपार शब्द-संपदा है, समृद्ध साहित्य है साथ ही अपना व्याकरण व अपनी लिपि है।

**हिंदी का समृद्ध साहित्य और अपना व्याकरण व अपनी लिपि, उन्नत सृजनशीलता, बोलने वालों की अकूत संख्या तथा अपार शब्द-संपदा**

हिन्दी दिवस पर छात्र-छात्राओं को संबोधित करते अतिथि • जागरण

प्रभारी विभागाध्यक्ष डॉ. विजय कुमार ने कहा कि पूरी दुनिया आज हिंदी दिवस मना रही है। अब हिंदी की शक्ति और सामर्थ्य का बोध पूरी दुनिया को हो चुकी है। तभी तो कार्पोरेट कंपनियों ने अपने उत्पाद को बेचने के लिए अंग्रेजी के साथ हिन्दी को अपना लिया है। हिन्दी भाषा के कारण ही हमें अंतरराष्ट्रीय पहचान मिली है। हिंदी की समृद्धि हमें गौरवान्वित करती है। डॉ. सुरेन्द्र प्रसाद सुमन ने कहा कि हिंदी हमारी माटी-पानी की भाषा है। यह बाजारू या बिकाऊ भाषा नहीं है। हिंदी के विकास के लिए किसी दिवस मनाने की आवश्यकता नहीं है। भारत के गिरमिटिया मजदूरों ने हिन्दी को वैश्विक फलक पर फैलाया है। हिन्दी वास्तव में हमारे दिल की भाषा है। कार्यक्रम की अध्यक्षीय करते पूर्व हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. चन्द्रभानु प्रसाद सिंह ने कहा कि कोई भी भाषा-भाषण या नारों से समृद्ध नहीं होती है। वह समृद्ध होती है व्यापार और उद्योग से, रोजी-रोजगार से। कार्यक्रम में डॉ. आनंद प्रकाश गुप्ता, डॉ. उमेश कुमार शर्मा, शोधार्थी कृष्णा अनुराग, सरोजनी गौतम, अभिषेक कुमार सिन्हा, धर्मेन्द्र दास, सियाराम मुखिया, प्रियंका कुमारी, चन्दीर पासवान, नरेश राम आदि मौजूद थे।

IMG-20210110-WA0002.jpg

13

HINDI

(10)

आज दिनांक 09/04/2021 को महापंडित राहुल सांकृत्यायन की जयंती के उपलक्ष्य में विभागाध्यक्ष डॉ० राजेन्द्र साह की अध्यक्षता में विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग में संगोष्ठी आयोजित हो रही है :

| क्रम सं० | नाम | हस्ताक्षर |
| --- | --- | --- |
| 1 | चन्द्रभानु प्रसाद सिंह | [illegible] |
| 2 | विजय कुमार | [illegible] 09.04.21 |
| 3 | सुरेन्द्र प्रसाद सुमन | |
| 4 | आनन्द प्रकाश गुप्ता | |
| 5 | अखिलेश कुमार | अखिलेश कुमार |
| 6 | धर्मेन्द्र दास | धर्मेन्द्र दास |
| 7 | अभिषेक कुमार सिन्हा | अभिषेक कुमार सिन्हा |
| 8 | कृष्णा अनुराग | कृष्णा अनुराग |
| 9. | खुशबू कुमारी | खुशबू कुमारी |
| 10 | पिंकी कुमारी | पिंकी कुमारी |
| 11. | ज्योति कुमारी | ज्योति कुमारी |
| 12 | कुमारी गायत्री | कुमारी गायत्री |
| 13 | कुमार नन्द ठाकुर | कुमार नन्द ठाकुर |
| 14. | सुशील कुमार पंडित | [illegible] |
| 15. | अशोक कुमार महतो | अशोक कुमार महतो |
| 16. | प्रदीप कुमार पाठक | [illegible] |
| 17 | मंजू कुमार सोरेन | मंजू कुमार सोरेन |
| 18 | Akhilesh Kumar Rathore | Akhilesh |
| 19. | Rahul D[illegible] | [illegible] |
| 20. | पवन कुमार ठाकुर | [illegible] |

| | | |
|---|---|---|
| 22 | शिखा सिन्हा | शिखा सिन्हा |
| 23. | Samir Kumar | Samir Ku |
| 24 | Rajakumar | [illegible] |
| 25. | Nitish Ku Mahto | [illegible] |
| 26. | Koushan Kumar | कौशल |
| 27. | Lalit Kumar | ललित कुमार |
| 28. | Tara Kumari | Tara. |
| 29 | Priyanka kumari | प्रियंका कुमारी |
| 30 | Raksha kumari | रक्षा कुमारी |
| 31 | Abrin Parween | Abrin Parween |
| 32 | Kunti kumari | कुंती कुमारी |
| 33. | विक्रम कुमार भारती | कुमार |
| 34 | कौशल कुमार रजक | कौशल |
| 35 | विकास कुमार महतो | विकास कु० |
| 36 | रौशनी कुमारी | रौशनी कुमारी |
| 37. | फूल लक्ष्मी कुमारी | फूल लक्ष्मी कुमारी |
| 38 | वीणा कुमारी | वीणा कुमारी |
| 39 | सुमंत कुमार | सुमंत कुमार |
| 40 | संदीप मिश्रा | Sandeep |
| 41 | कैलाश ठाकुर | Kailash |
| 42 | अनु कुमारी | अनु कुमारी |
| 43. | सोनी कुमारी | सोनी कुमारी |
| 44. | प्रियंका कुमारी | Priyanka kumari |
| 45 | सतीश कुमार | सतीश |
| 46 | पुजा कुमारी | Puja |
| 47 | रोहीत कुमार | Rohit Kumar |
| 48 | रोहन ठाकुर | रोहन |

क्रम

युक्त रेणु की रचनाओं को मानने वाले अहमद साहब ने रेणु को वास्तविक मानव पीड़ा का रचनाकार बताया। कुलसचिव के पश्चात प्रतिकुलपति का व्याख्यान हुआ। प्रतिकुलपति प्रो डॉली सिन्हा ने रेणु

उन्होंने बताया कि रेणु समग्र मानवीय दृष्टि के रचनाकार हैं। उनके साहित्य ने हाशिए के लोगों को केंद्र में लाकर, एक बड़ी रचनात्मक लड़ाई लड़ी है। डॉ सिंह ने रेणु द्वारा स्थापित मानदंड को आज तक

कुदाल, बंदूक और कलम के लेखक के रूप में रेणु को याद किया। इस प्रसंग में उन्होंने खेती और लेखन के अंतर्संबंध के दृष्टिकोण और रेणु के विचार भी व्यक्त किए। रेणु के आंदोलनधर्मी चरित्र से

समापन सत्र में लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय दिल्ली के प्राध्यापक जगदेव कुमार शर्मा जी ने मैला आंचल उपन्यास पर विस्तारपूर्वक चर्चा की तथा इस उपन्यास के विभिन्न पक्षों को

विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ सुरेंद्र प्रसाद सुमन ने किया जबकि धन्यवाद ज्ञापन डॉ विजय कुमार के उद्बोधन से हुआ। समापन सत्र का संचालन हिंदी विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ आनंद प्रकाश गुप्ता के द्वारा किया गया।

4 | दैनिक जागरण [redacted] 10 [illegible] 2021

**जयंती समारोह** | हिंदी विभाग में ऑनलाइन व ऑफलाइन मोड में कार्यक्रम का प्रतिकुलपति ने किया शुभारंभ

# स्कूल ऑफ नॉलेज थे राहुल सांकृत्यायन : प्रतिकुलपति

**विश्वविद्यालय के हिंदी व दर्शनशास्त्र विभाग के संयुक्त तत्वावधान में राहुल सांकृत्यायन का जयंती समारोह आयोजित**



जयंती समारोह में मंचासीन अतिथिगण • जागरण

जासं, दरभंगा : ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर हिंदी एवं दर्शनशास्त्र विभाग के संयुक्त तत्वावधान में शुक्रवार को साहित्यकार महापंडित राहुल सांकृत्यायन की जयंती पर समारोह आयोजित किया गया। हिंदी विभाग में ऑनलाइन और ऑफलाइन मोड में आयोजित समारोह का उद्घाटन करते हुए प्रतिकुलपति प्रो. डॉली सिन्हा ने कहा कि महापंडित राहुलजी एक अनथक यात्री थे। उन्होंने देश-विदेश की यात्राएं कीं। वे आजीवन शोधार्थी रहे। 34 भाषाओं के जानकार थे, लेकिन लेखन हिंदी में किया। वे स्कूल ऑफ नॉलेज थे।

मुख्य वक्ता प्रो. चंद्रभानु प्रसाद सिंह ने कहा कि राहुल सांकृत्यायन में शब्द और कर्म की एकता दिखाई पड़ती है। वे आंदोलनकारी लेखक थे। अमवारी किसान आंदोलन में वे सामंती जुल्म के शिकार हुए थे। उन्होंने ऐतिहासिक भौतिकवादी दृष्टि से वोल्गा से गंगा, सिंह सेनापति, जय यौधेय की रचना की। मध्य एशिया के इतिहास के साथ कनैला, दार्जिलिंग जनपदों का इतिहास भी लिखा।

समारोह में डॉ. सुरेंद्र प्रसाद सुमन ने साहित्यकार राहुल के जीवन संघर्षों पर प्रकाश डाला। प्रो. विजय कुमार ने कहा कि उनकी रचनाओं को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना चाहिए। प्रो. मुनेश्वर यादव ने राहुल जी के राजनैतिक चिंतन को उद्घाटित किया। डॉ घनश्याम राय ने कहा कि राहुल जी समाज के वंचित तबके के लेखक थे और उस तबके का उत्थान ही राहुल जी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। इस अवसर पर छात्र-छात्राओं की ओर से दीपक कुमार एवं स्नेहा कुमारी ने अपने-अपने विचार व्यक्त किए।

हिंदी विभागाध्यक्ष प्रो. राजेन्द्र साह ने कहा कि राहुल सांकृत्यायन की लेखनी कभी रुकी नहीं। उनकी समस्त रचना प्रक्रिया के केंद्र में मानवीय मूल्य, संवेदना, चेतना तथा मानवतावादी दृष्टि है। वे जीवन पर्यंत एक महान क्रांतिकारी एवं योद्धा की तरह असत्य, अन्याय, अनाचार एवं अंधास्था के खिलाफ संघर्ष करते रहे। उनकी वैचारिक तेजस्विता, मौलिक प्रतिभा तथा रचनात्मक प्रतिबद्धता अद्भुत है। हिंदी विभाग के अखिलेश कुमार ने कहा कि सांकृत्यायन जी की रचनाएं साहित्य दर्शन, इतिहास और राजनीति शास्त्र का समन्वय है। बुद्ध के बाद राहुल जी ने सत्य का नये सिरे से संधान किया। समारोह में डॉ. आनन्द प्रकाश गुप्ता, डॉ. ज्वालाचन्द्र चौधरी, डॉ. नेहा कुमारी, सरोजनी गौतम, धर्मेन्द्र दास, अभिषेक कुमार सिन्हा, गणेश पासवान समेत अन्य ऑनलाइन और ऑफलाइन शामिल हुए। वहीं साहित्यकार राहुल सांकृत्यायन के जीवन पर आधारित निबंध प्रतियोगिता में बेहतर स्थान हासिल करने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। प्रतियोगिता में स्नेहा कुमारी ने प्रथम, सुनीता कुमारी ने द्वितीय एवं अंशु कुमारी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम का संचालन प्रो. विजय कुमार जबकि धन्यवाद ज्ञापन अखिलेश कुमार किया।

महापंडित राहुल सांकृत्यायन जयंती
09/04/2021

[redacted] शनिवार 10.04.2021 | प्रभात खबर | 04

# स्कूल ऑफ नॉलेज थे राहुल सांकृत्यायन

**दरभंगा.** लनामिवि की प्रतिकुलपति प्रो. डॉली सिन्हा ने कहा कि राहुल सांकृत्यायन एक अनथक यात्री थे. देश-विदेश की यात्राएं की, पर सबसे महत्वपूर्ण यात्रा केदार पाण्डेय से रामउदार दास और अंत में राहुल सांकृत्यायन बनने की रही. ब्राह्मण कुल में जन्म लेकर बौद्ध होना और फिर मार्क्सवादी होना एक विरल वैचारिक यात्रा है. वे पीजी हिंदी एवं दर्शनशास्त्र विभाग की ओर से राहुल सांकृत्यायन की जयंती पर आयोजित कार्यक्रम में बोल रही थीं. कहा कि राहुल सांकृत्यायन स्कूल ऑफ नॉलेज थे. वे आजीवन शोधार्थी रहे. 34 भाषा के जानकार थे, किंतु लेखन हिंदी में किया.

**राहुल सांकृत्यायन के लेखन के केंद्र में इतिहास : प्रो. चंद्रभानु :** मुख्य वक्ता सह पीजी हिंदी विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. चन्द्रभानु प्रसाद सिंह ने कहा कि राहुल सांकृत्यायन में शब्द और कर्म की एकता दिखाई पड़ती है. वे आंदोलनकारी लेखक थे. अमवारी किसान आंदोलन में वे सामंती जुल्म के शिकार हुए. उनके लेखन के केन्द्र में इतिहास है. उन्होंने ऐतिहासिक भौतिकवादी दृष्टि से वोल्गा से गंगा, सिंह सेनापति, जय यौधेय की रचना की. मध्य एशिया के इतिहास के साथ कनैला, दार्जिलिंग जनपदों का इतिहास भी लिखा. दर्शन-दिग्दर्शन राहुल की मेधा का प्रतीक है. डॉ सुरेंद्र प्रसाद सुमन ने राहुल के जीवन संघर्षों से सीख लेने की नसीहत दी.

**पाठ्यक्रम में शामिल की जाए राहुल की रचनाएं :** **प्रो. विजय :** प्रो. विजय कुमार ने पाठ्यक्रम में राहुल की रचनाओं को शामिल करने पर बल दिया. प्रो. मुनेश्वर यादव ने राहुल जी के राजनीतिक चिंतन को उद्घाटित किया. डॉ घनश्याम राय ने कहा कि राहुल जी समाज के वंचित तबके के लेखक थे. उस तबके का उत्थान ही राहुल जी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी. छात्रों की ओर से दीपक कुमार एवं स्नेहा कुमारी ने विचार व्यक्त किया. कार्यक्रम का आरंभ राहुल सांकृत्यायन की तस्वीर पर पुष्पांजलि से हुआ.



कार्यक्रम में विचार रख रहे प्रो. विजय कुमार.

**अध्ययन जितना विस्तृत उतना ही विशाल था साहित्य- सृजन : प्रो. राजेंद्र साह**

इससे पूर्व अतिथियों का स्वागत करते हुए विभागाध्यक्ष प्रो. राजेन्द्र साह ने राहुल जी के बहुआयामी व्यक्तित्व एवं कृतित्व की चर्चा की. कहा कि राहुल सांकृत्यायन का अध्ययन जितना विस्तृत था, उतना ही विशाल उनका साहित्य-सृजन था. जिस प्रकार उनके पैर रुके नहीं, उसी प्रकार उनकी लेखनी कभी रुकी नहीं. उनकी समस्त रचना- प्रक्रिया के केन्द्र में मानवीय मूल्य, मानवीय संवेदना, मानवीय चेतना तथा मानवतावादी दृष्टि है. वे जीवन पर्यंत एक महान क्रांतिकारी एवं योद्धा की तरह असत्य, अन्याय, अनाचार एवं अंधास्था के खिलाफ संघर्ष करते रहे. उनकी वैचारिक तेजस्विता, मौलिक प्रतिभा तथा रचनात्मक प्रतिबद्धता अद्भुत है.

सहायक प्राध्यापक अखिलेश कुमार ने कहा कि सांकृत्यायन जी की रचनाएं साहित्य, दर्शन, इतिहास और राजनीति शास्त्र का समन्वय है. बुद्ध के बाद राहुल जी ने सत्य का नये सिरे से संधान किया. इस अवसर पर डॉ आनन्द प्रकाश गुप्ता, डॉ ज्वालाचन्द्र चौधरी, डॉ नेहा कुमारी, सरोजनी गौतम, धर्मेन्द्र दास, अभिषेक कुमार सिन्हा आदि उपस्थित थे. मौके पर आयोजित निबंध प्रतियोगिता में स्नेहा कुमारी ने प्रथम, बबीता कुमारी ने द्वितीय एवं अंशु कुमारी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया. इन्हें विभागाध्यक्ष ने सम्मानित किया.

लनामि विवि के हिन्दी- दर्शनशास्त्र विभाग में ऑनलाइन व ऑफलाइन जयंती समारोह आयोजित

09/04/2021

(6)

शनिवार, 10 अप्रैल 2021

सन्मार्ग Live News & Epaper www.sanmarglive.com

# अनथक यात्री थे राहुल सांकृत्यायन : प्रतिकुलपति

**दरभंगा/वरीय संवाददाता।** ललित मिथिला विश्वविद्यालय के हिन्दी एवं दर्शनशास्त्र विभाग के संयुक्त तत्वावधान में राहुल सांकृत्यायन का जयंती समारोह का उद्घाटन करते हुए प्रतिकुलपति प्रो. डौली सिन्हा ने कहा कि राहुल जी एक अनथक यात्री थे। उन्होंने देश-विदेश की यात्राएं की, पर सबसे महत्वपूर्ण यात्रा केदार पांडेय से रामउदार दास और अंत में राहुल सांकृत्यायन बनने की रही है। उन्होंने कहा कि ब्राह्मण कुल में जन्म लेकर बौद्ध होना और फिर मार्क्सवादी होना के विरल वैचारिक यात्रा है। प्रतिकुलपति ने कहा कि वह आजीवन शोधार्थी रहे। 34 भाषाओं के जानकार थे, किन्तु लेखन हिन्दी में किया। समारोह के मुख्य वक्ता प्रो. चंद्रभानु प्रसाद सिंह ने कहा कि राहुल सांकृत्यायन में शब्द और कर्म की एकता दिखाई पड़ती है, वे आंदोलनकारी लेखक थे। अमवाड़ी किसान आंदोलन वे सामंती जुर्म में शिकार हुए। उन्होंने मध्य एशिया के इतिहास के साथ कनैला, दार्जिलिंग जनपदों का इतिहास भी लिखा। दर्शन-दिग्दर्शन पुस्तक राहुल की मेघा का प्रतीक है। इस मौके पर डॉ. सुरेन्द्र प्रसाद सुमन, प्रो. विजय कुमार, प्रो. मुनेश्वर यादव, डॉ. घनश्याम राय के अलावा छात्र-छात्राओं की ओर से दीपक कुमार और स्नेहा कुमारी आदि ने विचार व्यक्त किए। विभागाध्यक्ष प्रो. राजेन्द्र साह ने अतिथियों का स्वागत किया। वहीं कार्यक्रम का संचालन प्रो. विजय कुमार और धन्यवाद ज्ञापन अखिलेश कुमार ने किया। इस मौके पर आयोजित निबंध प्रतियोगिता में स्नेहा कुमारी-प्रथम, बबीता कुमारी-द्वितीय और अंशु कुमारी-तृतीय स्थान पर रहे। कार्यक्रम में डॉ. आनंद प्रकाश गुप्ता, डॉ. ज्वालाचंद्र चौधरी, डॉ. नेहा कुमारी, सरोजनी गौतम, धर्मेन्द्र दास, अभिषेक कुमार सिन्हा सहित विभाग के छात्र-छात्राएं उपस्थित थे।